सुगम संस्कृत 3-5

अध्यापक दिग्दर्शिका

लेखक- सुशील कुमार सिंघल

विषय-सूची

सुगम संस्कृत-3

1. प्रथम: पाठ:– स्तुति: 02
2. द्वितीय: पाठ:– संज्ञा शब्दा: पुंलिङ्ग 02
3. तृतीय: पाठ:– संज्ञा शब्दा: स्त्रीलिङ्ग 03
4. चतुर्थ: पाठ:– संज्ञा शब्दा: नपुंसकलिङ्ग 05
5. पञ्चम: पाठ:– संज्ञा शब्दा: वचनानि 07
7. सप्तम: पाठ:– सर्वनाम शब्दा: प्रथम पुरुष 10
8. अष्टम: पाठ:– सर्वनाम शब्दा: मध्यम पुरुष 12
9. नवम: पाठ:– सर्वनाम शब्दा: उत्तम पुरुष 12
10. दशम: पाठ:– क्रिया–परिचय: लट्लकार 13
11. एकादश: पाठ:– वाक्य पठनम् 15
12. द्वादश: पाठ:– कारका: 19
13. त्रयोदश: पाठ:– वार्तालाप: 20
14. चतुर्दश: पाठ:– मम धेनु: 21
15. पञ्चदश: पाठ:– सुभाषितानी 22
16. षोडश: पाठ:– क्रमबोधक संख्या: 22

सुगम संस्कृत-4

1. प्रथम: पाठ:– स्तुति: 23
2. द्वितीय: पाठ:– प्रश्नोत्तरा:– कारका: 24
3. तृतीय: पाठ:– सुप्रभातम् 27
4. चतुर्थ: पाठ:– लोभी कुक्कुर: 28
5. पञ्चम: पाठ:– मम विद्यालय: 29
6. षष्ठ: पाठ:– काकस्य चातुर्यम् 30
7. सप्तम: पाठ:– नीतिश्लोका: 31
8. अष्टम: पाठ:– गुरुभक्त: शिष्य:– आरुणि: 32
9. नवम: पाठ:– कच्छप: शशक: च 34
10. दशम: पाठ:– पण्डित जवाहरलाल नेहरू: 35
11. एकादश: पाठ:– दीपावलि: 36
12. द्वादश: पाठ:– ग्राम्य जीवनम् 37
13. त्रयोदश: पाठ:– सूक्तिसञ्चय: 38
14. चतुर्दश: पाठ:– रक्षक: भक्षकात् प्रशस्यतर: 39
15. पञ्चदश: पाठ:– अम्लानि सन्ति द्राक्षाफलानि 41
16. षोडश: पाठ:– सिंह : मूषक: च 43
17. सप्तदश: पाठ:– व्याकरणम् 44
18. अष्टादश: पाठ:– अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि 45

सुगम संस्कृत-5

1. प्रथम: पाठ:– स्तुति: 46
2. द्वितीय: पाठ:– अस्माकं भारतवर्षम् 46
3. तृतीय: पाठ:– अस्माकं महापुरुषा: 48
4. चतुर्थ: पाठ:– शशकस्य चातुर्यम् 50
5. पञ्चम: पाठ:– स्वामी विवेकानन्द: 51
6. षष्ठ: पाठ:– गीतामृतम् 54
7. सप्तम: पाठ:– असत्यस्य परिणाम: 55
8. अष्टम: पाठ:– एकलव्यस्य गुरुभक्ति: 56
9. नवम: पाठ:– रक्षाबन्धनम् 59
10. दशम: पाठ:– अस्माकं पर्यावरणं 61
11. एकादश: पाठ:– सुभाषितानि 62
12. द्वादश: पाठ:– चत्वार: मूर्खा: 63
13. त्रयोदश: पाठ:– हिमालय: 65
14. चतुर्दश: पाठ:– संङ्घे शक्ति: 67
15. पञ्चदश: पाठ:– पत्रलेखनम् 69
16. षोडश: पाठ:– सूक्तय: 71
17. सप्तदश: पाठ:– विज्ञानस्य चमत्कार: 72
18. अष्टादश: पाठ:– हरिद्वारम् 74
19. एकोनविंशति: पाठ:– व्याकरणम् 75

प्रथमः पाठः — स्तुतिः

सर्वे भवन्तु.. दुःखभाग् भवेत्।

हे प्रभो! संसार के सभी प्राणी सुखी हों, सभी निरोगी हों। सभी कल्याण को देखें, कोई भी प्राणी दुखी न हो।

द्वितीयः पाठः — संज्ञा शब्दाः पुंलिङ्ग

बालक

पुरुष

घोड़ा

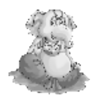
गणेश

कछुआ

उल्लू

तोता

बंदर

हाथी

कुत्ता

घड़ा

बगुला

अध्यापक

खरगोश

राम

मुरगा

हिरन

हंस

अभ्यासः Exercise

1. चित्रों को पहचानकर उनके नाम संस्कृत में लिखिएः

गणेशः

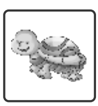
कच्छपः

बकः

शशकः

बालकः

कुक्कुरः

मृगः

पुरुषः

गजः

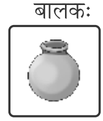
घटः

2. इन शब्दों के हिंदी/अंग्रेज़ी में अर्थ लिखिएः

घोड़ा	⇒	horse	उल्लू	⇒	owl	बगुला	⇒	heron
अध्यापक	⇒	teacher	मुरगा	⇒	cock	हिरन	⇒	deer
कछुआ	⇒	tortoise	बंदर	⇒	monkey	घड़ा	⇒	pitcher
गणेश	⇒	Ganesh	हंस	⇒	swan	तोता	⇒	parrot

3. संस्कृत में लिखिएः

कुक्कुरः	गजः	अश्वः
शुकः	बकः	उलूकः

बालकः पुरुषः शिक्षकः

कच्छपः हंसः मकरः

4. खाली स्थान भरिए:

अश्वः कुक्कुरः शिक्षकः मृगः घटः उलूकः

पुंल्लिङ्ग शब्दों का प्रयोग / Use of Masculine Words

एषः → यह

यह कौन है?
यह बालक/लड़का है।

यह कौन है?
यह घोड़ा है।

यह कौन है?
यह चीता है।

यह कौन है?
यह मेंढक है।

यह कौन है?
यह आदमी/व्यक्ति है।

यह कौन है?
यह मोर है।

यह कौन है?
यह पेड़ है।

यह कौन है?
यह हाथी है।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिए:

क. यह घोड़ा है। ख. यह उल्लू है।

ग. यह मोर है। घ. यह मुरगा है।

ङ. यह भालू है।

2. चित्र देखकर खाली स्थान भरिए:

क. वृक्षः ख. वृषभः ग. घटः घ. मण्डूकः

3. इन शब्दों की संस्कृत लिखिए:

एषः बालकः

व्याघ्रः गजः

कः मण्डूकः

4. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

क. एषः सर्पः अस्ति। ख. एषः घटः अस्ति।

ग. एषः बकः अस्तिः घ. एषः मकरः अस्ति।

तृतीयः पाठः संज्ञा शब्दाः स्त्रीलिङ्ग

सरस्वती

बकरी

मोरनी

घड़ी

चींटी

कोयल

अँगूठी	लड़की	कुल्हाड़ी	मैना	गिलहरी	लोमड़ी
छुरी	गौरैया	बेल	गाय	लक्ष्मी	मकड़ी

अभ्यासः Exercise

1. चित्रों को पहचानकर उनके नाम संस्कृत में लिखिए:

		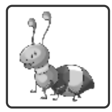	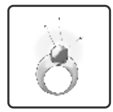	
धेनुः	चटका	पिपीलिका	ऊर्मिका	सारिका
			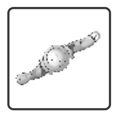	
मयूरी	कोकिलः	बालिका	घटिका	लोमशा

2. इन शब्दों के हिंदी/अंग्रेज़ी में अर्थ लिखिए:

कुल्हाड़ी	⇒	axe	सरस्वती	⇒	saraswati	छुरी	⇒	knife
गौरैया	⇒	sparrow	गाय	⇒	cow	मोरनी	⇒	peahen
लक्ष्मी	⇒	goddess of wealth	बेल	⇒	creeper	लड़की	⇒	girl
गिलहरी	⇒	squirrel	मैना	⇒	myna	कोयल	⇒	cuckoo

3. संस्कृत में लिखिए:

शारदा	कमला
धेनुः	अजा
मयूरी	चटका
मार्जारः	लोमशा

4. खाली स्थान भरिए:

घटिका	सारिका	ऊर्मिका	मयूरी
शारदा	कमला	चमरपुच्छः	कोकिलः
पिपीलिका	लता	अजा	बालिका

5. सही शब्द के सामने 3 चिह्न लगाइए:

अजा [3]
अजाः [ ]

लोमशः [ ]
लोमशा [3]

लूता [ ]
लता [3]

स्त्रीलिङ्ग शब्दों का प्रयोग / Use of Feminine Words

एषाः ➞ यह

यह कौन है?
यह बत्तख है।

यह कौन है?
यह भैंस है।

यह कौन है?
यह अध्यापिका है।

यह कौन है?
यह छात्रा है।

यह कौन है?
यह लोमड़ी है।

यह कौन है?
यह मक्खी है।

यह कौन है?
यह नाक है।

यह कौन है?
यह गौरैया है।

अभ्यासः *Exercise*

1. हिंदी में अनुवाद कीजिएः

क. यह भैंस है। ख. यह चींटी है। ग. यह कौन है?

घ. यह छुरी है। ङ. यह मक्खी है।

2. चित्र देखकर खाली स्थान भरिएः

क. नासिका ग. पिपीलिका

ख. वर्तिका घ. मक्षिका

3. इन शब्दों की संस्कृत लिखिएः

छात्रा लोमशा

चटका महिषी

चमरपुच्छः ऊर्मिका

4. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिएः

क. एषा घटिका अस्ति। ख. एषा कोकिलः अस्ति।

ग. एषा धेनुः अस्तिः। घ. एषा वर्तिका अस्ति।

चतुर्थः पाठः — संज्ञा शब्दाः नपुंसकलिङ्ग

गेंद

छाता

कमल

आम

अनार

नारियल

बगीचा

झोपड़ी

घर

पहिया

ऐनक/चश्मा

बरतन

तकिया

कद्दू/सीताफल

जूता

साबुन

दवात

हवाई जहाज

अभ्यासः Exercise

1. चित्रों को पहचानकर उनके नाम संस्कृत में लिखिएः

आम्रम्

उपनेत्रम्

कमलम्

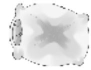
उपधानम्

मसिपात्रम्

उटजः

कन्दुकम्

फेनिलम्

वायुयानम्

दाडिमम्

2. इन शब्दों के हिंदी/अंग्रेज़ी में अर्थ लिखिएः

बगीचा	⇒ orchard	बरतन	⇒ pots	कद्दू	⇒ pumpkin
दवात	⇒ inkpot	नारियल	⇒ coconut	गेंद	⇒ ball
जूता	⇒ shoe	घर	⇒ home	चश्मा	⇒ spectacle

3. खाली स्थान भरिएः

कूष्माण्डम्   कमलम्   उपनेत्रम्   कन्दुकम्

फेनिलम्   पादत्राणम्   नारिकेलम्   उपधानम्

4. संस्कृत में लिखिएः

आम्रम्   दाडिमम्

उटजः   गृहम्

कूष्माण्डम्   मूलकम्

5. इन शब्दों को सही लिङ्ग के कॉलम में लिखिएः

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिंङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
कच्छपः	लोमशा	कमलम्
शशकः	ऊर्मिका	चक्रम्
बालकः	पिपीलिका	आम्रम्
हंसः	सारिका	फेनिलम्
वानरः	शारदा	मसिपात्रम्

नपुंसकलिङ्ग शब्दों का प्रयोग / Use of Neuter Gender Words

एतत् → यह

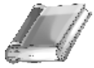
यह क्या है?
यह पुस्तक है।

यह क्या है?
यह फूल है।

यह क्या है?
यह घर है।

यह क्या है?
यह गेंद है।

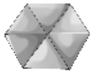

यह क्या है?
यह षट्कोण है।

यह क्या है?
यह बगीचा है।

यह क्या है?
यह केला है।

यह क्या है?
यह दवात है।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिएः

क. यह पुस्तक है।
ख. यह गेंद है।
ग. यह दवात है।
घ. यह तकिया है।
ङ. यह केला है।
च. यह बगीचा है।

2. चित्र देखकर खाली स्थान भरिएः

क. कन्दुकम्
ख. फेनिलम्
ग. कदलीफलम्
घ. मसिपात्रम्
ङ. उपनेत्रम्
च. आम्रम्
छ. पादत्राणम्
ज. उपधानम्

3. इन शब्दों की संस्कृत लिखिएः

नारिकेलम् कदलीफलम्
उद्यानम् पुस्तकम्
पुष्पम् मसिपत्रम्
चक्रम् कमलम्

4. 'एषः/ एषा' अथवा 'एतत्' शब्दों द्वारा खाली स्थान भरिएः

क. एषः
ख. एतत्
ग. एषा
घ. एतत्
ङ. एषः
च. एषा
छ. एषा
ज. एतत्

5. चित्र देखकर दिए गए प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिएः

क. एतत् उटजः अस्ति।
ख. एतत् पात्रम् अस्ति।
ग. एतत् कूष्माण्डम् अस्ति।
घ. एतत् नारिकेलम् अस्ति।
ङ. एतत् कन्दुकम् अस्ति।
च. एतत् मसिपात्रम् अस्ति।

पञ्चमः पाठः — संज्ञा शब्दाः वचनानि

एकवचन, द्विवचन, बहुवचन

पुंल्लिंग

एकवचन

एक लड़का

द्विवचन

दो लड़के

बहुवचन

बहुत-से लड़के

एक तोता

दो तोते

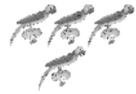
बहुत-से तोते

एक लड़की

दो लड़कियाँ

बहुत-सी लड़कियाँ

स्त्रीलिंग

एक बिल्ली

दो बिल्लियाँ

बहुत-सी बिल्लियाँ

एक फूल

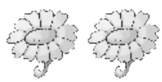
दो फूल

बहुत-से फूल

नपुंसकलिंग

एक पुस्तक

दो पुस्तकें

बहुत-सी पुस्तकें

अभ्यासः Exercise

1. चित्र देखकर सही शब्द के सामने (3) चिह्न लगाइए:

वानराः
वानरौ 3

पुष्पे
पुष्पाणि 3

गजः 3
गजौ

मक्षिका
मक्षिकाः 3

बालकः 3
बालकौ

बालिके
बालिकाः 3

पुस्तके 3
पुस्तकम्

अश्वाः
अश्वौ 3

2. इन शब्दों के वचन लिखिए:

बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
एकवचन	द्विवचन	एकवचन
द्विवचन	बहुवचन	द्विवचन

3. इन शब्दों के द्विवचन लिखिए:

घटौ	रामौ	बालिके

श्वानौ	फले	पत्रे
चटके	गृहे	फले

4. इन शब्दों के बहुवचन लिखिए:

कपोताः	सिंहाः	मयूराः
पुष्पाणि	लताः	गृहाणि
फलानि	बालकाः	बालिकाः

वचनों का प्रयोग (Use of Numbers)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	 यह कौन है? यह एक लड़का है।	 ये दो कौन हैं? ये दो लड़के हैं।	 ये सब कौन हैं? ये सब लड़के हैं।
पुंल्लिंग	 यह कौन है? यह एक घोड़ा है।	 ये दो कौन हैं? ये दो घोड़े हैं।	 ये सब कौन हैं? ये सब घोड़े हैं।
	 यह कौन है? यह एक बकरी है।	 ये दो कौन हैं? ये दो बकरियाँ हैं।	 ये सब कौन हैं? ये सब बकरियाँ हैं।
स्त्रीलिंग	 यह कौन है? यह एक गौरैया है।	 ये दो कौन हैं? ये दो गौरैया हैं।	 ये सब कौन हैं? ये सब गौरैया हैं।
	 यह क्या है? यह एक फल है।	 ये दो क्या हैं? ये दो फल हैं।	 ये सब क्या हैं? ये सब फल हैं।
नपुंसकलिंग	 यह क्या है? यह एक छाता है।	 ये दो क्या हैं? ये दो छाते हैं।	 ये सब क्या हैं? ये सब छाते हैं।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिए :

क. ये दो बंदर हैं। ख. ये सब बकरियाँ हैं। ग. यह एक मुरगा है।

घ. ये सब कमल हैं। ङ. ये सब मक्खियाँ हैं।

2. संस्कृत लिखिए :

बालकौ पुष्पाणि

चटकाः अजे

छत्रम् बिडालाः

3. खाली स्थान में उचित कर्ता भरिए :

क. एते ख. एतानि ग. एषा घ. एषः ङ. एतौ च. एतानि

4. कोष्ठक से उचित शब्द छाँटकर खाली स्थान भरिए :

क. स्तः ख. अजा ग. सन्ति घ. अस्ति ङ. स्तः

5. इन प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. एतौ बालकौ स्तः। ख. एताः मक्षिकाः सन्ति।

सप्तमः पाठः — सर्वनाम शब्दाः प्रथम पुरुष

एतद् (यह)

पुल्लिंग

एकवचन **द्विवचन** **बहुवचन**

एक हाथी

दो हाथी

बहुत-से हाथी

स्त्रीलिंग

एक लड़की

दो लड़कियाँ

बहुत-सी लड़कियाँ

नपुंसकलिंग

एक पत्ता

दो पत्ते

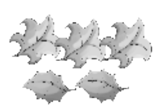
बहुत-से पत्ते

इदम् (यह)

पुल्लिंग

एक खरगोश

दो खरगोश

बहुत-से खरगोश

स्त्रीलिंग

एक छात्रा

दो छात्राएँ

बहुत-सी छात्राएँ

नपुंसकलिंग

एक फूल

दो फूल

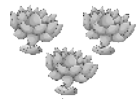

बहुत-से फूल

तद् (वह)

पुल्लिंग

एक लड़का

दो लड़के

बहुत-से लड़के

स्त्रीलिंग

एक लड़की

दो लड़कियाँ

बहुत-सी लड़कियाँ

नपुंसकलिंग

एक पुस्तक

दो पुस्तकें

बहुत-सी पुस्तकें

अभ्यासः *Exercise*

1. 'एतद्' और 'तद्' शब्दों के तीनों वचनों और तीनों लिङ्ग में रूप लिखिए:

एतद्

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
पुंलिङ्ग	एषः	एतौ	एते
स्त्रीलिङ्ग	एषा	एते	एताः
नपुंसकलिङ्ग	एतत्	एते	एतानि

तद्

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
पुंलिङ्ग	सः	तौ	ते
स्त्रीलिङ्ग	सा	ते	ताः
नपुंसकलिङ्ग	तत्	ते	तानि

2. **इन शब्दों के लिङ्ग और वचन लिखिए:**

सा	ते (स्त्री0)	तत्	तानि
स्त्रीलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	नपुंसकलिंग
एकवचन	द्विवचन	एकवचन	बहुवचन
तौ	**ताः**	**ते (पुं0)**	**सः**
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	पुल्लिंग
द्विवचन	बहुवचन	बहुवचन	एकवचन

3. **इन शब्दों की संस्कृत लिखिए:**

एतौ/इमौ	सः
एताः/इमाः	ते
एतत् / इदम्	ते
एषः/अयम्	इमानि

अष्टमः पाठः — सर्वनाम शब्दाः मध्यम पुरुष

युष्मद् → तुम = you

पुल्लिंग

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
एक किसान	दो किसान	बहुत-से-किसान

स्त्रीलिंग

एक लड़की	दो लड़कियाँ	बहुत-सी लड़कियाँ

नपुंसकलिंग

एक कपड़ा	दो कपड़े	बहुत-से-कपड़े

नवमः पाठः — सर्वनाम शब्दाः उत्तम पुरुष

अस्मद् → मैं, हम = I, We

पुल्लिंग

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
एक राजा	दो राजा	बहुत-से राजा

स्त्रीलिंग

एक बकरी	दो बकरियाँ	बहुत-सी बकरियाँ

नपुंसकलिंग

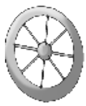	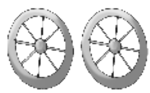	
एक पहिया	दो पहिए	बहुत-से पहिए

अभ्यासः Exercise

1. चित्र देखकर खाली स्थान भरिए:

कृषकौ	वस्त्रम्	बालिकाः
नृपः	अजे	चक्राणि

2. 'युष्मद्' तथा 'अस्मद्' के तीनों वचनों में रूप लिखिए:

त्वम्	युवाम्	यूयम्
अहम्	आवाम्	वयम्

3. इन शब्दों की संस्कृत लिखिए:

त्वम्	यूयम्
युवाम्	आवाम्

4. इन शब्दों के लिङ्ग और वचन लिखिए:

स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	स्त्रीलिंग
द्विवचन	एकवचन	एकवचन

दशमः पाठः — क्रिया-परिचयः लट्लकार

अभ्यासः Exercise

1. चित्र देखकर सही धातुरूप लिखिए:

हसति चलतः पठति वदतः पिबति क्रीडन्ति

2. धातुओं को उनके अर्थ से मिलाइए:

धातु	अर्थ	धातु	अर्थ
वद्	पढ़ना	गच्छ्	बैठना
पठ्	खाना	तिष्ठ्	दौड़ना
लिख्	बोलना	धाव्	हँसना
खाद्	लिखना	हस्	जाना

क्रिया का प्रयोग Use of Verb

क्रियाएँ : लट्लकार (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन)

प्रथम पुरुष

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वह पढ़ता है। बालक पढ़ता है।	वे दोनों पढ़ते हैं। दो बालक पढ़ते हैं।	वे सब पढ़ते हैं। बहुत-से बालक पढ़ते हैं।
तुम लिखते हो। तुम बोलते हो।	तुम दोनों लिखती हो। तुम दोनों बोलती हो।	तुम सब लिखते हो। वे सब बोलती हैं।
मैं खेलता हूँ। मैं दौड़ता हूँ।	हम दोनों खेलते हैं। हम दोनों दौड़ते हैं।	हम सब खेलते हैं। हम सब दौड़ते हैं।

इन्हें भी पढ़िए

शेर दहाड़ता है।	दो घोड़े दौड़ते हैं।	बहुत-सी लड़कियाँ बोलती हैं।
मोर नाचता है।	दो बकरियाँ चरती हैं।	बहुत-से घोड़े दौड़ते हैं।
श्वेता देखती है।	दो तोते बोलते हैं।	बहुत-सी लड़कियाँ नाचती हैं।
वह याद करती है।	दो फूल खिलते हैं।	बहुत-से पक्षी कूकते हैं।
पत्ता गिरता है।	दो फल गिरते हैं।	बहुत-सी स्त्रियाँ जाती हैं।
तुम खाते हो।	तुम दोनों बैठते हो।	तुम सब पढ़ते हो।
तुम हँसते हो।	तुम दोनों दौड़ते हो।	तुम सब आते हो।
तुम खेलते हो।	तुम दोनों हँसते हो।	तुम सब दौड़ते हो।
तुम नाचती हो।	तुम दोनों याद करते हो।	तुम सब खेलते हो।
तुम देते हो।	तुम दोनों गायक हो।	तुम सब सैनिक हो।
मैं पढ़ता हूँ।	हम दोनों पढ़ते हैं।	हम सब जाते हैं।
मैं बोलता हूँ।	हम दोनों खेलते हैं।	हम सब खेलते हैं।
मैं नमस्कार करता हूँ।	हम दोनों बोलते हैं।	हम सब हँसते हैं।
मैं देखता हूँ।	हम दोनों बैठते हैं।	हम सब गिरते हैं।
मैं बैठता हूँ।	हम दोनों पीते हैं।	हम सब अध्यापिकाएँ हैं।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिएः
Translate into Hindi:

क. बहुत-से बालक पढ़ते हैं।
ख. दो फूल खिलते हैं।
ग. वह याद करती है।
घ. तुम नाचती हो।
ङ. तुम दोनों बैठते हो।
च. तुम सब आते हो।

2. कोष्ठक से उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरिएः

क. बालकौ ख. अश्वाः ग. पुष्पम् घ. त्वम् ङ. अहम्

3. खाली स्थान में उचित क्रियाएँ भरिएः

क. रक्षन्ति ख. चलति ग. नृत्यतः घ. लिखथः ङ. क्रीडाम्ः च. नमामि

4. इन वाक्यों को शुद्ध करके लिखिएः

क. ते भ्रमन्ति।
ख. खगाः कूजन्ति।
ग. युवाम् वदथः।
घ. त्वम् पश्यसि।
ङ. शशकाः कूर्दन्ति।
च. अहम् नृत्यामि।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. ते नृत्यन्ति।
ख. आवाम् पठावः।
ग. युवाम् क्रीडथः।
घ. सः लिखति।
ङ. अहम् धावामि।
च. आवाम् हसावः।

एकादशः पाठः — वाक्य पठनम्

अकारान्त पुंलिङ्ग (एषः, एतौ, एते)

एषः (एकवचन)

यह कौन है?
यह एक लड़का है।
लड़का क्या करता है?
लड़का पत्र लिखता है।

यह कौन है?
यह एक अध्यापक है।
अध्यापक क्या करता है?
अध्यापक पढ़ाता है।

यह कौन है?
यह एक बंदर है।
बंदर क्या करता है?
बंदर कूदता है।

एतौ (द्विवचन)

ये दोनों कौन हैं?
ये दो सिंह हैं।
दोनों सिंह क्या करते हैं?
दोनों सिंह दहाड़ते हैं।

ये दोनों कौन हैं?
ये दो घोड़े हैं।
वे दोनों घोड़े क्या करते हैं?
दोनों घोड़े घास चरते हैं।

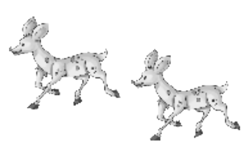

ये दोनो कौन हैं?
ये दो हिरन हैं।
दोनों हिरन क्या करते हैं?
दोनों हिरन दौड़ते हैं।

एते (बहुवचन)

ये सब कौन हैं?
ये सब मोर हैं।
मोर क्या करते हैं?
मोर नाचते हैं।

ये सब कौन हैं?
ये सब कबूतर हैं।
कबूतर क्या करते हैं?
कबूतर कूकते हैं।

ये सब कौन हैं?
ये सब लड़के हैं।
लड़के क्या करते हैं?
लड़के पढ़ते हैं।

इन्हें भी पढ़िए

यह कौन है?
यह एक हाथी है।
हाथी क्या करता है?
हाथी गेंद से खेलता है।

ये दोनों कौन हैं?
ये दो छात्र हैं।
दोनों छात्र क्या करते हैं?
दो छात्र विद्यालय जाते हैं।

ये सब कौन हैं?
ये सब ग्वाले हैं।
सब ग्वाले क्या करते हैं?
सब ग्वाले बैठे हुए हैं।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिएः

क. लड़का पत्र लिखता है। ख. दो घोड़े घास चरते हैं। ग. ये सब लड़के हैं।
घ. हाथी गेंद से खेलते हैं। ङ. ये दो छात्र हैं।

2. खाली स्थान भरिएः

क. लिखति ख. अश्वौ ग. बालकः घ. गच्छतः ङ मृगौ च. एते

3. उदाहरण के अनुसार इन शब्दों के रूप लिखिएः

Write declensions of these words as example:

बालकः	बालकौ	बालकाः
वानरः	वानरौ	वानराः
अश्वः	अश्वौ	अश्वाः
कपोतः	कपोतौ	कपोताः
गजः	गजौ	गजाः
एते	एतौ	एताः

आकारान्त स्त्रीलिंङ्ग (एषा, एते, एताः)

एषा (एकवचन)

यह कौन है?
यह एक बकरी है।
बकरी क्या करती है?
बकरी घास चरती है।

यह कौन है?
यह गौरैया है।
चिड़िया क्या करती है?
चिड़िया आकाश में उड़ती है।

यह कौन है?
यह गाय है।
गाय क्या करती है?
गाय दूध देती है।

एते (द्विवचन)

ये दोनों कौन हैं?
ये दो लड़कियाँ हैं।
दोनों लड़कियाँ क्या करती हैं?
दोनों लड़कियाँ गाती हैं।

ये दोनों कौन हैं?
ये दो नौकरानियाँ हैं।
दोनों नौकरानियाँ क्या करती हैं?
दो नौकरानियाँ धोती हैं।

ये दोनों कौन हैं?
ये दो अध्यापिकाएँ हैं।
दोनों अध्यापिकाएँ क्या करती हैं?
दोनों अध्यापिकाएँ विद्यालय जाती हैं।

एताः (बहुवचन)

ये सब कौन हैं?
ये सब भेड़ें हैं।
ये सब भेड़ें क्या करती हैं?
ये सब भेड़ें चरती हैं।

ये सब कौन हैं?
ये सब गौरैया हैं।
ये सब गौरैया क्या करती हैं?
ये सब गौरैया कूकती हैं।

ये सब कौन हैं?
ये सब कलियाँ हैं।
कलियाँ क्या करती हैं?
कलियाँ खिलती हैं।

इन्हें भी पढ़िए

यह कौन है?
यह भैंस है।
भैंस दूध देती है।

ये दो कौन हैं?
ये दो लताएँ हैं।
दो लताएँ झुकती हैं।

ये सब कौन हैं?
ये बहुत-सी कोयलें हैं।
बहुत-सी कोयलें मीठा बोलती हैं।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिएः

क. गौरैया आकाश में उड़ती है।
ख. यह गाय है।
ग. दो नौकरानी कपड़े धोती हैं।
घ. ये बहुत-सी कोयलें हैं।

2. इन प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर लिखिएः

क. अजा घासम् चरति।
ख. शिक्षिके विद्यालम् गच्छतः।
ग. चटकाः कूजन्ति।

3. खाली स्थान में उचित शब्द भरिएः

क. एषा चटका अस्ति।
ख. बालिके गायतः।
ग. एताः एड़काः सन्ति।
घ. एताः कोकिलाः सन्ति।
ङ. एते लते स्तः।
च. महिषी दुग्धं ददाति।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. एषा का अस्ति।
ख. एते सेविके स्तः।
ग. कलिकाः विकसन्ति।
घ. एताः एड़का सन्ति।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग (एतत्, एते, एतानि)

एतत् (एकवचन)

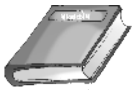

यह क्या है?
यह पुस्तक है।
यह मेरी पुस्तक है।

यह क्या है?
यह घर है।
यह तेरा घर है।

यह क्या है?
यह फल है।
फल मीठा है।

एते (द्विवचन)

ये दो क्या हैं?
ये दो कमल हैं।
ये दोनों कमल सुंदर हैं।

ये दो क्या हैं?
ये दो घोंसले हैं।
दोनों घोंसलों में अंडे हैं।

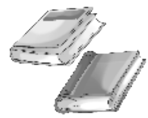

ये दो क्या हैं?
ये दो पुस्तकें हैं।
ये दोनों तेरी पुस्तकें हैं।

एतानि (बहुवचन)

ये सब क्या हैं?
ये सब पत्ते हैं।
ये सब नींबू के पत्ते हैं।

ये सब क्या हैं?
ये सब फल हैं।
सब फल मीठे हैं।

ये सब क्या हैं?
ये सब छाते हैं।
ये सब छाते रंगीन हैं।

इन्हें भी पढ़िए

यह क्या है?
यह पत्ता है।
पत्ता पेड़ से गिरता है।

ये दो क्या हैं?
ये दो घर हैं।
ये दोनों घर सुंदर हैं।

ये सब क्या हैं?
ये बहुत-सी पुस्तकें हैं।
ये सब राम की पुस्तकें हैं।

अभ्यासः *Exercise*

1. हिंदी में अनुवाद कीजिएः

क. यह तेरा घर है।
ख. दोनों घोंसलों में अंडे हैं।
ग. ये सब नींबू के पत्ते हैं।
घ. पत्ता पेड़ से गिरता है।

2. चित्र देखकर सही वाक्य के सामने 3 चिहन लगाइएः

एतत् गृहम् अस्ति। [3]
एतत् नीडम् अस्ति। [ ]

एते पुस्तके स्तः। [ ]
एते छत्रे स्तः। [3]

एतत् फलम् अस्ति। [ ]
एतानि फलानि सन्ति। [3]

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. एते कमले स्तः। ख. एतानि छत्राणि सन्ति।

ग. एतानि पुस्तकानि सन्ति। घ. एतत् मम् गृहम् अस्ति।

द्वादशः पाठः — कारकाः

पढ़िए और समझिएः

कर्ता कारक
(प्रथम विभक्ति)

दो लड़के दौड़ते हैं।

कर्म कारक
(द्वितीय विभक्ति)

लड़की घर जाती है।

करण कारक
(तृतीय विभक्ति)

कृष्ण गेंद से खेलता है।

संप्रदान कारक
(चतुर्थी विभक्ति)

उमा बालक के लिए दूध लाती है।

अपादान कारक
(पंचमी विभक्ति)

साँप नेवले से डरता है।

संबंध कारक
(षष्ठी विभक्ति)

वह दिनेश की माता जी हैं।

अधिकरण कारक
(सप्तमी विभक्ति)

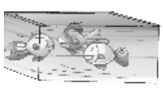

बहुत-सी मछलियाँ पानी में तैरती हैं।

संबोधन
(संबोधन)

राम! तुम वहाँ क्या करते हो?

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिएः

क. लड़की घर जाती है। ख. नरेश डंडे से कुत्ते को मारता है।

ग. साँप नेवले से डरता है। घ. माता जी! कुएँ में जल नहीं है।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिएः

क. पठति ख. पत्रं ग. कन्दुकेन घ. जले ङ रामस्य

3. इन शब्दों के अर्थ और विभक्ति लिखिएः

घर	द्वितीया विभक्ति	नेवले से	पञ्चमी विभक्ति
जल में	सप्तमी विभक्ति	बालक के लिए	चतुर्थी विभक्ति
गेंद से	तृतीया विभक्ति	बालक	संबोधन

4. 'रामः' शब्द के सभी विभक्तियों और वचनों में रूप लिखिएः

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्

तृतीया	रामेन	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामानाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे रामः!	हे रामौ!	हे रामाः!

त्रयोदशः पाठः वार्तालापः

कृष्ण – यह कौन है?
श्रुति – यह डाकिया है।
कृष्ण – यह कहाँ जाता है?
श्रुति – यह डाकघर जाता है।
कृष्ण – यह वहाँ जाकर क्या करता है?
श्रुति – यह वहाँ जाकर पत्र लाता है।
कृष्ण – फिर यह क्या करता है?
श्रुति – फिर यह गाँव और शहर को जाता है।
कृष्ण – फिर।
श्रुति – फिर यह लोगों के लिए पत्र बाँटता है।
कृष्ण – फिर लोग क्या करते हैं?
श्रुति – फिर लोग पत्र पढ़ते हैं।
कृष्ण – क्या डाकिया प्रतिदिन पत्र लाता है?
श्रुति – हाँ, वह प्रतिदिन पत्र लाता और देता है।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिएः

क. डाकिया कहाँ जाता है?
ख. डाकिया वहाँ जाकर क्या लाता है?
ग. फिर डाकिया क्या करता है?
घ. पत्र कौन पढ़ता है?

2. हिंदी में अर्थ लिखिएः

डाकिया	कहाँ	फिर/तब
डाकघर	लोगों के लिए	बाँटता है

3. इन शब्दों की संस्कृत लिखिएः

कः	तत्र
च	आनयति
प्रतिदिनम्	ददाति

4. संस्कृत में वाक्य बनाइएः

Make sentences in Sanskrit:

पत्रवाहकः अस्माकं पत्राणि आनयति।
पत्रवाहकः पत्रालयः गच्छति।

पत्रवाहकः तत्र गत्वा पत्राणि आनयति।
अयम् जनेभ्यः पत्राणि वितरति।
आम्, सः प्रतिदिनम् पत्राणि आनयति ददाति च।

चतुर्दशः पाठः मम धेनुः

इयम मम् ....सन्ति।

हिन्दी अनुवाद- यह मेरी गाय है। गाय एक बहुत उपयोगी पशु है। इसके चार पैर, एक मुँह, एक नाक, दो आँखें और दो कान होते हैं। इसके चार थन होते हैं।

सा चणकान् ....भवति।

हिन्दी अनुवाद- वह चना, खल और हरी घास खाती है। गाय हमें मीठा दूध देती है। इसका दूध अमृत के समान होता है। इसका दूध पीकर हम बलवान बनते हैं। गाय के दूध से दही, मक्खन, घी और अनेक प्रकार की स्वादिष्ट मिठाइयाँ बनाई जाती हैं।

अस्माकम् देशे..कथयन्ति च।

हिन्दी अनुवाद- हमारे देश में बहुत-से लोग गाय को पालते हैं। गाय का गोबर अत्यंत पवित्र माना जाता है। लोग गोबर से घर लीपते हैं। गाय की पुत्री गाय होती है। गाय के बछड़े बैल होते हैं। यह बछड़े बैल होकर खेत को जोतते हैं।
सभी लोग गाय को माता के समान मानते हैं और उसे गौमाता कहते हैं।

अभ्यासः Exercise

1. इन प्रश्नों के संस्कृत में उत्तर लिखिएः

क. धेनुः महान उपकारी पशुः अस्ति।
ख. धेनुः चणकान्, खलिम्, हरिततृणानि च खादति।
ग. अस्याः दुग्धम् अस्मभ्यम् अमृततुल्यम् भवति।
घ. जनाः गोमयेन गृहाणि लेपयन्ति।
ङ. सर्वे जनाः धेनुः मातृवत् मानयन्ति, गोमाता कथयन्ति च।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिएः

क. उपकारी ख. अमृततुल्यम ग. धेनुम् घ. वत्साः भवति ङ. मातृवत् च. धेनुः

3. इन शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखिएः

खल	मीठा	मक्खन
बलवान	गोबर को	लीपते हैं
बछड़े	खेतों को	माता के समान

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. इयम् धेनुः अस्ति।
ख. अस्याः चत्वारः स्तनाः सन्ति।
ग. सः मम मित्रम् अस्ति।
घ. तौ क्षेत्रम् कर्षतः।
ङ. पुष्पाणि विकसन्ति।

पञ्चदशः पाठः — सुभाषितानी

1. आलसी को विद्या कहाँ; मूर्ख को धन कहाँ। निर्धन को मित्र कहाँ से, बिना मित्र के सुख कहाँ से अर्थात् नहीं।
2. प्रतिदिन अपने से बड़े-बूढ़ों के प्रति सम्मान का स्वभाव रखने वालों, उनकी सेवा करने वालों की ये चार चीज़ें बढ़ती हैं–आयु, विद्या, यश और बल।
3 प्रिय वाक्य बोलने से सभी संतुष्ट होते हैं, इसलिए वैसा ही बोलना। बोलने में क्यों दरिद्र बनें।
4. प्रत्येक पहाड़ पर मणि नहीं होती, प्रत्येक हाथी में मोती नहीं होता, निश्चय ही सब जगह सज्जन लोग नहीं मिलते, प्रत्येक वन में चंदन नहीं होता अर्थात् ये सभी चीज़ें ईश्वर की देन हैं और निश्चित स्थान पर ही मिलती हैं।
5. सत्य बोलें, प्रिय बोलें पर अप्रिय सत्य न बोलें और प्रिय असत्य न बोलें, ऐसी सनातन रीति है।

षोडशः पाठः — क्रमबोधक संख्याः

स्वयं याद कीजिए।

अभ्यासः Exercise

1. इन संख्याओं को संस्कृत तथा अंग्रेज़ी में लिखिएः

त्रयः	three	पञ्च	five
सप्त	seven	नव	nine
एकादश	eleven	त्रयोदश	thirteen
पञ्चदश	fifteen	एकोनविंशतिः	nineteen
एकविंशतिः	twenty one	पञ्चविंशतिः	twenty five

2. इन्हें अंकों में लिखिएः

4	8	12
14	16	20
22	26	30

3. इन संख्याओं को हिंदी में लिखिएः

चार	दस	सत्रह
बीस	तेईस	सत्ताईस
ग्यारह	पाँच	उनतीस

4. उदाहरण के अनुसार ठीक एक पहले और बाद की संख्या संस्कृत में लिखिएः

दश	द्वादश
चतुर्दश	षोडश
द्वाविंशतिः	चतुर्विंशतिः
सप्तविंशतिः	एकोनत्रिंशत्
विंशतिः	द्वाविंशतिः

सुगम संस्कृत-4

प्रथमः पाठः स्तुतिः

1. ॐ गं गणपतये नमः

गणों के स्वामी श्री गणेश जी को नमस्कार।

2. ॐ सिद्धिविनायक नमो नमः।

सिद्धियों के प्रदाता विनायक श्री गणेश जी को बारम्बार प्रणाम।

3. वक्रतुण्ड .... सर्वदा॥

तिरछी सूँड वाले, विशाल शरीर वाले, करोड़ों सूर्यों के समान कान्तिवाले, भगवान श्री गणेशजी मेरे समस्त कार्यों में सदैव निर्विघ्नता करें अर्थात् मेरे समस्त कार्य निर्विघ्न सम्पन्न कराते रहें।

4. गजाननं .... पङ्कजम्॥

हाथी के समान मुख वाले भूतों और (शिव के) गणों आदि से पूजित, कैथ तथा जामुन के फलों को प्रसन्नतापूर्वक खाने वाले, उमा के पुत्र, शोक का विनाश करने वाले, विघ्नों के स्वामी (विनाशक) गणेश जी के चरण कमलों को मैं प्रणाम करता हूँ।

अभ्यासः *Exercise*

1. 'गणेश वंदना' का हिंदी में अर्थ लिखिएः

हाथी के समान मुख वाले भूतों और (शिव के) गणों आदि से पूजित, कैथ तथा जामुन के फलों को प्रसन्नतापूर्वक खाने वाले, उमा के पुत्र, शोक का विनाश करने वाले, विघ्नों के स्वामी (विनाशक) गणेश जी के चरण कमलों को मैं प्रणाम करता हूँ।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिएः

क. वक्रतुण्ड **महाकाय** सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

ख. **गजाननं** भूतगणादिसेवितम्,
कपित्थजम्बू **फलचारु**भक्षणम्।
उमासुतं **शोकविनाशकारकं**
नमामि विघ्नेश्वर **पादपङ्कजम्**।।

3. इन शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखिएः

हाथी के समान मुख वाले	भूतगणों के समुदाय
पूजित	खाने वाले
उमा के पुत्र	दुःखों को दूर करने वाले
विघ्नों के स्वामी	चरण-कमल

4. इन शब्दों के द्विवचन और बहुवचन लिखिएः

गजौ	गजाः	भूते	भूतानि
फले	फलानि	सुतौ	सुताः
पादौ	पादाः	पंकजे	पंकजानि

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. वयं गणेशं नमामः।

ख. गणेशः शिवस्य पुत्रः अस्ति।

ग. सः जम्बूफलं खादति।
घ. यूयम् किम् खादथ?
ङ. ते किम् लिखन्ति?

द्वितीयः पाठः प्रश्नोत्तराः- कारकाः

कर्ता कारक, प्रथमा विभक्ति

राघव क्या कर रहा है?
राघव पढ़ रहा है।

दो बालिकाएँ क्या कर रही हैं?
दो बालिकाएँ दौड़ रही हैं।

पक्षी क्या कर रहे हैं?
पक्षी कूक रहे हैं या पक्षी चहचहा रहे हैं।

कर्म कारक, द्वितीया विभक्ति

दो बालक क्या खा रहे हैं?
दो बालक लड्डू खा रहे हैं।

तुम दोनों क्या कर रहे हो?
हम दोनों भोजन कर (खा) रहे हैं।

किसान क्या कर रहे हैं?
किसान खेत जोत रहे हैं।

इन वाक्यों को भी पढ़िए

श्यामा हँसती है।	पुष्प खिलता है।	फल गिरता है।
आचार्य लिखता है।	वाहन जाता है।	बालिकाएँ दौड़ती हैं।
राधा नाचती है।	वे दोनों पढ़ते हैं।	वे भ्रमर गुञ्जन कर रहे हैं।
गोविन्द सुलेख लिखता है।	मनोहर सत्य बोलता है।	दो बंदर पानी पीते हैं।
सेवक कार्य कर रहे हैं।	कमल खिल रहे हैं।	हम पुस्तक पढ़ रहे हैं।

अभ्यासः Exercise

1. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए :

क. मोदकं ख. विकसति ग. भ्रमराः घ. जलम् ङ. वदति च. वयम्

2. इन शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखिए :

बहुत-से पक्षी	लड्डू	खेत को
बहुत-से भौंरे	बोलता है	बहुत-से कमल

3. संस्कृत में अनुवाद कीजिए

क. फलम् पतति। ख. तौ पत्रम् लिखतः। ग. सः मुखम् प्रक्षालयति।
घ. वयम् पुस्तकम् पठामः। ङ. वानरौ जलम् पिबतः।

4. उदाहरण के अनुसार लिखिए :

पिबतः	पिबन्ति
नृत्यतः	नृत्यन्ति
खादतः	खादन्ति

करण कारक, तृतीया विभक्ति

राधिका किससे खाती है?
राधिका हाथ से खाती है।

बालक कुत्ते को किससे पीटता है?
बालक कुत्ते को डण्डे से पीटता है।

सम्प्रदान कारक, चतुर्थी विभक्ति

राजा किसे धन देता है?
राजा भिखारी को धन देता है।

सारिका सरोवर पर क्यों जाती है?
सारिका जल के लिए सरोवर पर जाती है।

माली उपवन को किससे सींचता है?
माली उपवन को जल से सींचता है।

शिक्षक किसे ज्ञान देता है?
शिक्षक शिष्यों को ज्ञान देता है।

इन वाक्यों को भी पढ़िए-

बालिका कलम से पत्र लिखती है।
वह फूलों से पूजा करता है।
मैं गेंद से खेलता हूँ।
माता पुत्र के लिए सेव लाती है।
शिक्षक बालक को पुस्तक देता है।
हम ज्ञान के लिए विद्यालय जाते हैं।

दो बालक मुँह से दूध पीते हैं।
वे कलम से लेख लिखते हैं।
किसान हल से जोतता है।
बालक पढ़ने के लिए विद्यालय जाते हैं।
मैं तुम सबको मीठा फल देता हूँ।
पिता पुत्र के लिए वस्त्र लाता है।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिए :

क. वह फूलों से पूजा करता है।
ख. वे सब कलम से निबंध (लेख) लिखते हैं।
ग. हम सब ज्ञान के लिए विद्यालय जाते हैं।
घ. मैं तुम सबके लिए मीठा फल देता हूँ।

2. खाली स्थान भरिएः

क. पत्रं ख. भिक्षुकाय ग. मुखेन पिबतः घ. पठनाय गच्छन्ति ङ. पुत्राय च. शिक्षकः पुस्तकं

3. इन शब्दों के अर्थ लिखिएः

किससे	मुँह से	हल से
पुत्र के लिए	तुम सबके लिए	पढ़ने के लिए
किस लिए/क्यों/कैसे	किसके लिए	ज्ञान के लिए

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. ते मुखेन भोजनम् खादन्ति।
ख. अहम् कलमेन सुलेखं लिखामि।
ग. सेवकः घोटकस्य घासं आनयति।
घ. वृक्षाः परोपकाराय फलं ददति/यच्छन्ति।
ङ. सैनिकाः देशाय प्राणम् त्यजन्ति।

अपादान कारक, पञ्चमी विभक्ति

स्त्रियाँ कहाँ से जल ला रही हैं?
स्त्रियाँ कुएँ से जल ला रही हैं।

सैनिक कहाँ से गिरता है?
सैनिक घोड़े से गिरता है।

तुम कहाँ से आ रहे हो?
मैं गाँव से आ रहा हूँ।

सम्बन्ध कारक, षष्ठी विभक्ति

भोजन कौन पका रहा है?
राम की माता भोजन पका रही है।

यह कौन है?
यह लता की दादी जी हैं।

यह क्या है?
यह गोपाल के दादा जी हैं।

इन वाक्यों को भी पढ़िए-

पिताजी नगर से आ रहे हैं।
मैं तुम सबसे नहीं डरता हूँ।
फल पेड़ से गिरता है।

सैनिक घर से सीमाक्षेत्र (सरहद) पर जा रहे हैं।
हम कुएँ से जल लाते हैं।
बालक पेड़ से कूद रहे हैं।

हमारा घर सुन्दर है।	यह दिनेश का मामा है।
मेरा घर गंगा के तट पर है।	मामा उपवन की शोभा देख रहा है।
हिमालय भारत का पर्वतराज है।	भौंरे फूल का रस पी रहे हैं।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिए :

क. बहुत-सी स्त्रियाँ कुएँ से पानी लाती हैं।
ख. यह लता की दादी जी हैं।
ग. बहुत-से बंदर पेड़ से कूदते हैं।
घ. हिमालय भारत के पहाड़ों का राजा है।

2. इन क्रिया रूपों के पुरुष एवं वचन लिखिए :

पुरुष	**वचन**	**पुरुष**	**वचन**
प्रथम	एकवचन	प्रथम	बहुवचन
प्रथम	एकवचन	उत्तम	एकवचन
प्रथम	एकवचन	प्रथम	द्विवचन

3. खाली स्थान में दिए गए शब्दों से अपादान कारक के रूप भरिए :

क. गृहात् ख. वृक्षात् ग. बिलात् घ. मेघात्

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. सः आपणात् फलानि आनयति।
ख. बालकः चौरात् विभेति।
ग. अस्माकं गृहं सुन्दरं अस्ति।
घ. रामः दशरथस्य पुत्रः अस्ति।

अधिकरण कारक, सप्तमी विभक्ति	**सम्बोधन कारक, सम्बोधन**
बालक खेल के मैदान में दौड़ रहा है।	हे बालक तुम कहाँ जा रहे हो?
वह रास्ते में नहीं दौड़ रहा है।	श्रीमान् जी! मैं घर जा रहा हूँ।
तुम भी रास्ते में मत दौड़ो।	
पेड़ों पर पक्षी बैठे हैं।	हे सेवक! तुम क्या ले जा रहे हो?
फूलों पर भौंरे घूम रहे हैं।	महोदय! मैं दूध ले जा रहा हूँ।
पेड़ों पर फल हैं।	
कुएँ में जल है।	हे तात! तुम क्या ला रहे हो?
कुएँ में मीठा जल है।	हे वत्स! मैं लड्डू ला रहा हूँ।
कुएँ पर स्त्रियाँ हैं।	

इन वाक्यों को भी पढ़िए-

कृष्ण के दोनों कानों में कुण्डल हैं।	हे दिनेश! क्या तुम प्रतिदिन गृहकार्य करते हो?
राधिका शयनकक्ष में बैठी है।	हाँ महोदय! मैं प्रतिदिन गृहकार्य करता हूँ।
प्याले में खीर है।	हे कृषक! तुम क्या बो रहे हो?
हमारे देश में गंगा बहती है।	महोदय! मैं गेहूँ के बीज बो रहा हूँ।

अभ्यासः Exercise

1. हिंदी में अनुवाद कीजिए :

क. तालाब में मछलियाँ तैर रही हैं।

ख. फूलों पर बहुत-से भौंरे घूमते हैं।

ग. श्रीमान् ! मैं घर से आ रहा हूँ।

घ. हे सैनिक! तुम देश के लिए युद्ध करते हो।

2. उचित शब्दों द्वारा खाली स्थान भरिए :

क. हस्ते ख. विद्यालये ग. आकाशे घ. श्रीमन् ङ. मोदकानि च. बालक!, पठसि?

3. इन शब्दों की विभक्ति लिखिए :

तृतीया	षष्ठी	प्रथमा
षष्ठी	चतुर्थी	सप्तमी

4. इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

रास्ते में	फूलों पर	बहुत-सी स्त्रियाँ
खीर	हमारा/हमारे	गेहूँ
ले रहा हूँ	कानों में	बो रहा हूँ

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. आवाम् वाराणस्यां वसावः।

ख. मोहनस्य हस्ते पुस्तकम् अस्ति।

ग. तडागे कमलानि विकसन्ति।

घ. हे मातः! कूपे जलं न अस्ति।

तृतीयः पाठः — सुप्रभातम्

सवेरे पूर्वदिशा में सूर्योदय होता है। उदय काल में सूर्य लाल रंग का होता है। प्रातःकाल में सूर्य की किरणें बहुत कोमल होती हैं। उसकी शोभा अतुल्य होती है। सवेरे लोग ईश्वर को नमस्कार करते हैं और सूर्य को अर्घ्य देते हैं। बालक और बालिकाएँ अपना पाठ याद करते हैं। माता रसोईघर में भोजन पकाती है। बड़ी बहन वस्त्र धो रही है। छोटी बहन घर साफ कर रही है। बड़ा भाई बाजार से सब्जी ला रहा है। मैं दूध ला रहा हूँ।

प्रभातकाल में लोग घूमने के लिए बगीचे में जाते हैं। सूर्य निकलने से तालाबों में कमल खिलते हैं। पुष्पों की सुगन्ध सब जगह फैल रही है। सवेरे स्वास्थ्यप्रद वायु बहती है। किसान खेतों में जा रहे हैं। ग्वाले दूध दुह रहे हैं और वितरित कर रहे हैं। वानर पेड़ों पर कूद रहे हैं। वृक्षों की शाखाओं पर पक्षी चहचहा रहे हैं। कमलों पर भौंरे गुञ्जन कर रहे हैं। अहो प्रभातकाल अत्यन्त मनोहर और सुन्दर होता है।

1. इन प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिएः

क. सूर्योदयः पूर्वदिशायां भवति।

ख. प्रातःकाले जनाः भ्रमणाय उद्यानं गच्छन्ति।

ग. प्रभाते स्वास्थ्यप्रदः वायुः प्रवहति।

घ. गोपालकाः दुग्धं दुहन्ति वितरन्ति च।

ङ. अग्रजः आपणात् शाकम् आनयति।

2. खाली स्थान भरिएः

क. रश्मयः ख. स्वपाठं ग. सूर्योदयात्, कमलानि घ. वृक्षाणां, खगाः ङ. सुगन्धः, प्रसरति।

3. दिए वाक्यांशों का सही मेल मिलाइएः

'क'	'ख'
क. उदयकाले सूर्यः	नमन्ति सूर्याय च अर्घम् यच्छन्ति।
ख. प्रभाते जनाः ईश्वरं	भ्रमराः गुञ्जन्ति।
ग. प्रभाते स्वास्थ्यप्रदः	भोजनं पचति।
घ. कमलेषु	रक्तवर्णः भवति।
ङ. माता पाकशालायां	वायुः प्रवहति।

4. पाठ में प्रयुक्त कारकों के नाम तथा शब्द लिखिएः

शब्द	कारक	शब्द	कारक
पूर्वदिशायां	अधिकरण	पाकशालायां	अधिकरण
सूर्यस्य	सम्बन्ध	सरोवरेषु	अधिकरण
आपणात्	अपादान	पुष्पाणां	सम्बन्ध
सूर्याय	सम्प्रदान	वृक्षेषु	अधिकरण

5. हिंदी में अर्थ लिखिएः

लाल वर्ण वाला	अपने पाठ को	धोती/धोता है।
बाजार से	घूमने के लिए	बहुत से कमल
सब जगह	बहुत से ग्वाले	वृक्षों के

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. बालिकाः स्वपाठं स्मरन्ति।

ख. अग्रजाः वस्त्राणि प्रक्षालयति।

ग. प्रातःकाले सुगन्धः वायुः प्रसरति।

घ. वानराः वृक्षेषु कूर्दन्ति।

ङ. अनुजा गृहं सम्मार्जयति।

चतुर्थः पाठः — लोभी कुक्कुरः

किसी गाँव में एक (लोभी) कुत्ता रहता था। वह एक लोभी कुत्ता था। एक दिन वह नदी के तट पर आया। उसके मुँह में एक रोटी थी। उसने नदी के जल में अपनी परछाई देखी। जल में अपनी परछाई को देखकर उसने मन में सोचा– यह दूसरा कुत्ता है। मैं इस कुत्ते की रोटी छीन लेता हूँ।''

ऐसा सोचकर वह लालची कुत्ता दूसरे कुत्ते की ओर भौंकने लगा। इससे कुत्ता के मुँह से रोटी नदी के पानी में गिर गई।

पानी में रोटी गिर जाने से वह लोभी कुत्ता बहुत दुःखी हुआ।

इसलिए अधिक लालच नहीं करना चाहिए।

लोभ से मन दूषित होता है। जैसे– (लोभ के कारण) कुत्ते के मुँह में स्थित रोटी भी मुँह से गिर गई।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. कस्मिंश्चित ग्रामे एकः कुक्कुरः अवसत्।

ख. नदीतटं कुक्कुरः अगच्छत्।

ग. कुक्कुरस्य मुखे एका रोटिका आसीत।
घ. कुक्कुरः जले स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्।
ङ. कुक्कुरस्य रोटिका नद्याः जले अपतत्।

2. खाली स्थान भरिए :

क. नदी तटम् ख. कुक्कुरः अपश्यत् ग. कुक्कुरस्य घ. मुखात्, अपतत्, ङ. लोभात्

3. हिन्दी में अर्थ लिखिएः

किसी में	रहता था	देखकर
छीन लेता हूँ	दूसरा	रोटी
दुःखी	लोभ से	गिर गई

4. संस्कृत लिखिए :

ग्रामे	कुक्कुरः	अबुक्कयत्
एकस्मिन् दिने	अचिन्तयत्	मनसि
प्रतिबिम्बम्	तस्य	लोभः

5. इस अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

किसी गाँव में एक कुत्ता रहता था। वह एक लोभी कुत्ता था। एक दिन वह नदी के तट पर आया। उसके मुँह में एक रोटी थी। उसने नदी के जल में अपनी परछाई देखी। जल में अपनी परछाई को देखकर उसने मन में सोचा– यह दूसरा कुत्ता है। मैं इस कुत्ते की रोटी छीन लेता हूँ।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए

क. युवां सेवफलम् अखादतम्।
ख. वयं स्वपाठं अपठाम।
ग. वने एकः श्रृगालः/जम्बूकः अवसत्।
घ. बालिकाः भोजनम् अखादन्।
ङ. ते कुत्र अगच्छन्?

पञ्चमः पाठः — मम विद्यालयः

यह मेरा विद्यालय है। मेरे विद्यालय का नाम 'शिशु लोक विद्या मन्दिर है। यह विद्यालय नगर के बीच में स्थित है। मैं यहाँ पढ़ता हूँ। इस विद्यालय में ही मेरा छोटा भाई और बड़ी बहन भी पढ़ते हैं। मेरे विद्यालय में अनेक बालक और बालिकाएँ पढ़ते हैं। मैं चतुर्थ कक्षा में पढ़ता हूँ। मेरा छोटा भाई दूसरी कक्षा में पढ़ता है। मेरी बड़ी बहन पाँचवीं कक्षा में पढ़ती है। विद्यालय का भवन बहुत विशाल है। यहाँ शिक्षिकाएँ और शिक्षक पढ़ाते हैं। हम यथा समय विद्यालय जाते हैं।

मेरे विद्यालय में एक सुन्दर बगीचा है। बगीचे में अनेक सुन्दर पेड़ हैं। पेड़ों पर मनोहर फूल और मीठे फल हैं।

मेरे विद्यालय में एक पुस्तकालय है। वहाँ बहुत-सी पुस्तकें हैं। हम सब वहाँ पढ़ने के लिए जाते हैं। पुस्तकों के पढ़ने से ज्ञान होता है। विद्यालय का पुस्तकालयाध्यक्ष स्वभाव से सरल है। वह हमारी सहायता करता है।

मेरे विद्यालय में एक क्रीड़ास्थल भी है। सब छात्र मध्यवकाश में वहाँ खेलते हैं। मैं भी वहाँ गेंद से खेलता हूँ। कल फुटबाल का खेल हुआ था। कल वहाँ क्रिकेट का खेल होगा।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. मम विद्यालयस्य नाम ''शिशु लोक विद्या मन्दिरं'' इति अस्ति।

ख. अहं चतुर्थकक्षायां पठामि।
ग. वृक्षेषु मनोहराणि पुष्पाणि मधुराणि फलानि च सन्ति।
घ. पुस्तकानां पठनेन ज्ञानं भवति।
ङ. सर्वे छात्राः मध्यावकाशे क्रीडास्थले क्रीडन्ति।

2. **खाली स्थान भरिए :**

क. छात्राः ख. पञ्चमकक्षायां ग. अत्र, वृक्षाः घ. फुटबालस्य ङ. पुस्तकालयाध्यक्षः

3. **क. संस्कृत में लिखिए:**

नगरस्य	अनुजः	सुन्दरः
अनेकाः	पठनेन	क्रीड़ास्थलम्
ह्यः	अग्रजा	श्वः

ख. संधि-विच्छेद कीजिए:

विद्या + आलयः		नगर + अस्य
पुस्तक + आलयः		मध्य + अवकाशे

4. **इन शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए:**

विद्यालय	=	मम विद्यालयः नगरस्य मध्ये स्थितः अस्ति।
बड़ी बहन	=	मम अग्रजा पञ्चमकक्षायां पठति।
उचित समय पर	=	वयं यथा समये विद्यालयं गच्छामः।
सुन्दर	=	विद्यालये शोभनं क्रीडास्थलम् अस्ति।
पढ़ने के लिए	=	वयं पठनायं विद्यालयं गच्छामः।
गेंद से	=	क्रीडास्थले बालकाः कन्दुकेन क्रीडन्ति।

5. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए :**

क. मम विद्यालयः नगरस्य मध्ये स्थितः अस्ति।
ख. उद्याने अनेके वृक्षाः सन्ति।
ग. विद्यालस्य भवनम् अतीव विशालम् अस्ति।
घ. पुस्तकानां पठनेन ज्ञानं भवति।
ङ. श्वः विद्यालये वॉलीवॉलस्य क्रीडा भविष्यति।

6. **इस अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए :**

मेरे विद्यालय में एक पुस्तकालय है। वहाँ बहुत-सी पुस्तकें हैं। हम सब वहाँ पढ़ने के लिए जाते हैं। पुस्तकों के पढ़ने से ज्ञान होता है। विद्यालय का पुस्तकालयाध्यक्ष स्वभाव से सरल है। वह हमारी सहायता करता है।

षष्ठः पाठः — काकस्य चातुर्यम्

किसी वन में एक चतुर कौआ रहता था। एक बार ग्रीष्मकाल में वह प्यास से बहुत व्याकुल हुआ। वह पानी के लिए इधर-उधर घूमा, परन्तु पानी की एक बूँद भी नहीं मिली। तब उसने दूर एक घड़ा देखा। कौआ घड़े के पास गया। उस घड़े में बहुत थोड़ा पानी था।

कौए की चोंच पानी तक नहीं पहुँच सकी। अतः कौआ पानी पीने में समर्थ न हो पाया। तब उसने एक उपाय सोचा।

वह दूर से एक-एक कंकड़ लाया, और कंकड़ों को घड़े में डाला। उसने बार-बार उन पत्थरों को घड़े में डाला। धीरे-धीरे घड़े में जल ऊपर आ गया। तब वह कौआ पानी पीकर तृप्त हो गया। वह सन्तुष्ट

हो गया। सत्य ही कहा गया है– परिश्रम से ही कार्य सिद्ध होते हैं। जो परिश्रम नहीं करते हैं, वे सफलता प्राप्त नहीं करते।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. काकः कस्मिंश्चित् वने निवसति स्म।
ख. काकः दूरात् एकं घटं अपश्यत्।
ग. सः घटे उपलान् अक्षिपत्।
घ. काकः जलं पानाय समर्थः न अभवत्।
ङ. परिश्रमिणः (ये परिश्रमं कुर्वन्ति ते) सफलतां लभन्ते।

2. खाली स्थान भरिए :

क. इतस्ततः ख. स्वल्पं ग. उपलम् घ. पानाय समर्थः ङ. परिश्रमेण

3. क. इन शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखिए:

प्यास से	घूमा	पत्थर
डाला	इधर-उधर	बहुत थोड़ा

ख. इन शब्दों की संस्कृत लिखिए :

अवसत् / निवसति स्म	घटः	जलपर्यन्तम्
अचिन्तयत्	आनयत्	परिश्रमेण

4. इन वाक्यांशों का सही मिलान मिलाइए:

	जलम् पानाय एकं उपायम्	अभवत्।
	दूरात् एकं-एकं उपलम्	अभवत्।
काकः	पिपासया अतीव व्याकुलः	अपश्यत्।
	जलम् पीत्वा तृप्तः	आनयत्।
	दूरे एकं घटम्	अचिन्तयत्।

5. इन शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

रामः एकः चतुरः छात्रः अस्ति।
काकः जलार्थं इतस्ततः अभ्रमत्।
काकः जलं पातुं एकम् उपायम् अचिन्तयत्।
काकः घटे उपलान् अक्षिपत्।
मनुष्यः विवेकेन कार्याणि सिध्यति।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. काकः चतुरः आसीत्।
ख. घटे स्वल्पं जलम् आसीत्।
ग. सः घटे एकम् एकम् उपलम् अक्षिपत्।
घ. काकः जलं पीत्वा तृप्तः अभवत्।
ङ. परिश्रमेण एव कार्याणि सिध्यन्ति।

सप्तमः पाठः नीतिश्लोकाः

1. राम के समान पुत्र, भरत के समान छोटा भाई और सीता के समान पत्नी ये तीनों एक स्थान में प्राप्त होने कठिन हैं।

2. कौए जैसी चेष्टा, बगुले जैसा ध्यान, कुत्ते जैसी नींद वाला, थोड़ा खाने वाला और घर का त्याग करने वाला, ये विद्यार्थी के पाँच लक्षण हैं।
3. यह मेरा है या पराया ऐसी गणना तो तुच्छ हृदय वाले लोगों की होती है। उदार चरित्र वाले लोगों के लिए तो सारी पृथ्वी ही एक परिवार (के समान) होती है।
4. जिसकी अपनी बुद्धि नहीं है, शास्त्र उसका क्या (लाभ) करता है? अर्थात् कुछ नहीं। जो व्यक्ति नेत्रहीन है, दर्पण उसका क्या करेगा? अर्थात् अंधे के लिए तो दर्पण व्यर्थ है।
5. अठारह पुराणों में व्यास के दो वचन ही महत्त्वपूर्ण हैं। परोपकार पुण्य के लिए तथा दूसरों का उत्पीड़न पाप के लिए होता है।

अभ्यासः Exercise

1. इन पंक्तियों का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

क. राम जैसा पुत्र, भरत जैसा छोटा भाई।

ख. यह मेरा है या पराया, ऐसी गणना छोटे हृदय वाले लोग ही करते हैं। उदार चरित्र वालों के लिए तो पृथ्वी ही एक परिवार है।

ग. अठारह पुराणों में व्यास के दो वचन हैं।

2. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. रामस्य सदृशः पुत्रः, भरतस्य समः अनुजः सीतायाः सदृशी भार्या इति त्रयमेकत्र दुर्लभम्।

ख. काकचेष्टा बकोध्यानं श्वाननिद्रा अल्पाहारी गृहत्यागी इति विद्यार्थिनः पञ्चलक्षणम् ।

ग. उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् अस्ति।

घ. यस्य स्वयं प्रज्ञा न अस्ति शास्त्रं तस्य किमपि न करोति।

3. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए:

क. बकोध्यानं, तथैव च ख. दर्पणः ग. परोपकारः, पापाय घ. भार्या

4. दूसरे, चौथे और पाँचवे श्लोक का अर्थ लिखिए:

क. कौए जैसी चेष्टा, बगुले जैसा ध्यान, कुत्ते जैसी नींद वाला, थोड़ा खाने वाला और घर का त्याग करने वाला, ये विद्यार्थी के पाँच लक्षण हैं।

ख. जिसकी अपनी बुद्धि नहीं है, शास्त्र उसका क्या (लाभ) करता है? दोनों आँखों से हीन (अन्धे) व्यक्ति का दर्पण उसका क्या (लाभ/काम) करेगा?

ग. अठारह पुराणों में व्यास के दो वचन ही महत्त्वपूर्ण हैं। परोपकार पुण्य के लिए तथा दूसरों का उत्पीड़न पाप के लिए होता है।

अष्टमः पाठः — गुरुभक्तः शिष्यः– आरुणिः

प्राचीन काल में धौम्य नाम का एक महर्षि था। वह आश्रम में शिष्यों को पढ़ाता था। उसके शिष्यों में आरुणि नाम का एक शिष्य था।

एक बार वर्षाकाल में ऋषि धौम्य ने उसे खेत की रक्षा करने के लिए कहा। गुरु की आज्ञा से आरुणि खेत की ओर गया। आरुणि ने खेत को देखा। वहाँ वर्षा के तीव्र वेग से खेत का बाँध (मेंड) टूट गया था। वहाँ से तीव्र वेग से पानी बाहर निकल रहा था। उसने पानी को रोकने के लिए अनेक प्रयत्न किए। उसके सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गए। तब उसने स्वयं ही जल में लेटकर जल के वेग को रोका।

शाम के समय आरुणि को आश्रम में न देखकर मुनि ने आरुणि की खोज की। शिष्यों के साथ धौम्य खेत पर गए। उन्होंने आरुणि को जोर से पुकारा।

आरुणि बोला– ''गुरुदेव', मैं यहाँ टूटे हुए मेंड़ वाले स्थान पर खेत का जल रोकने के लिए लेटा हुआ हूँ।''

खेत में आरुणि को देखकर महर्षि बहुत चकित हुए। मुनि आरुणि की कर्त्तव्यनिष्ठा से बहुत प्रसन्न हुए। वह आरुणि से बोले– निश्चय ही तुम विद्वान् बनोगे।''

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. महर्षेः नाम धौम्यः आसीत्।

ख. तस्य एकः शिष्यः नाम आरुणिः आसीत्।

ग. धौम्यः आरुणिं क्षेत्रस्य रक्षाकर्त्तुम् अकथयत्।

घ. आरुणिः क्षेत्रे अपश्यत् यत् तत्रत्य जलं वेगेन निस्सरति स्म।

ङ. धौम्यः आरुणिं आश्रमे अविलोक्य आरुणेः अन्वेषणं कृतवान्।

2. खाली स्थान भरिए :

क. क्षेत्रं ख. वेगेन ग. जले, जलस्य घ. दृष्ट्वा, जातः ङ. कर्त्तव्यनिष्ठया

3. सही वाक्य के सामने 3 चिह्न लगाइए:

क. 3 ख. 3 ग. 3 घ. 3 ङ. 3

4. दिए गए शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिए:

विभक्ति	**वचन**
द्वितीया	बहुवचन
षष्ठी	एकवचन
षष्ठी	एकवचन
तृतीया	बहुवचन
यह शब्द अव्यय है	
द्वितीया	एकवचन

5. इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

वर्षाकाल में	वर्षाकाले सर्वत्र हरीतिमा दृश्यते।
टूट गया	जलवेगेन क्षेत्रस्य बन्धः भग्नः अभवत्।
खोज करना	मुनिः आरुणेः अन्वेषणं कृतवान्।
जल रोकने के लिए	आरुणिः जलावरोधाय बहून् प्रयत्नान् अकरोत्।
बहुत आश्चर्य	आरुणिं दृष्ट्वा मुनिम् अति विस्मयो जातः।

6. इस अनुच्छेद का हिंदी-अनुवाद कीजिए:

एक बार वर्षाकाल में ऋषि धौम्य ने उसे खेत की रक्षा करने के लिए कहा। गुरु की आज्ञा से आरुणि खेत की ओर गया। आरुणि ने खेत को देखा। वहाँ वर्षा के तीव्र वेग से खेत का बाँध टूट गया था। वहाँ से जल वेग से निकल रहा था। उसने जल को रोकने के लिए बहुत प्रयत्न किए। उसके सारे प्रयत्न व्यर्थ हो गए। तब उसने स्वयं जल में लेटकर जल के वेग को रोका।

नवमः पाठः — कच्छपः शशकः च

हे बालकों! इस चित्र को देखो। इस चित्र में एक कछुआ और एक खरगोश है। कछुआ खरगोश को देखता है और पूछता है, "हे मित्र! तुम कहाँ जा रहे हो?"

खरगोश – मैं दूसरे तालाब में जा रहा हूँ।
कछुआ – मैं भी चलता हूँ।
खरगोश – मैं वेग से चलता हूँ, तुम वेग से नहीं चलते हो, तुम धीरे-धीरे चलते हो।
कछुआ – क्यों नहीं चलता हूँ, मैं भी शीघ्र चलता हूँ।
खरगोश – अब हम देखते हैं, कौन शीघ्र चलता है।

तब वे दोनों चलते हैं। खरगोश तेज दौड़ता है। कछुआ धीरे-धीरे चलता है। खरगोश थक जाता है। वह रास्ते में एक पेड़ को देखता है और वहाँ ठहर जाता है। वह वहाँ विश्राम करता है।

किन्तु कछुआ धीरे-धीरे निरन्तर चलता रहता है। कछुआ वहाँ विश्राम नहीं करता। वह आगे जाता है। इस तरह कछुआ तालाब पर शीघ्र पहुँच जाता है। खरगोश देरी से वहाँ पहुँचता है। कछुआ जीत जाता है। और कहा गया है– "निरन्तर प्रयत्न में लगा रहने वाला ही विजयी होता है।"

अभ्यासः Exercise

1. इन वाक्यों का हिंदी में अर्थ लिखिए :

क. खरगोश – मैं दूसरे तालाब में जा रहा हूँ।
ख. कछुआ – मैं भी चल रहा हूँ।
ग. खरगोश – अब हम दोनों देखते हैं कि कौन शीघ्र चलता है।
घ. वह रास्ते में एक पेड़ को देखता है, और ठहर जाता है।
ङ. कछुआ तालाब पर शीघ्र पहुँच जाता है और जीतता है।

2. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. कच्छपः शशकं पश्यति पृच्छति च– " भो मित्र! त्वं कुत्र गच्छसि?"
ख. अन्ते शशकः अकथयत्– 'अधुना आवां पश्यावः, कः शीघ्रं चलति।'
ग. शशकः शीघ्रं धावति, कच्छपः मन्दं मन्दं चलति।
घ. शशकः तडागं विलम्बेन उपगच्छति।
ङ. कच्छपः जयति शशकः च पराजितः भवति।

3. खाली स्थान में सही शब्द भरिए :

क. वेगेन ख. चलसि ग. वृक्षं घ. तडागं ङ. विलम्बेन

4. इन शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

तालाब को	अहं सुन्दरं तडागं पश्यामि।
अब	अधुना वेगेन जलं वर्षति।
ठहरता है	शशकः वृक्षं दृष्ट्वा तत्र विरमति।
लगातार	कच्छपः निरन्तरं शनैः शनैः चलति।
जीतता है	कच्छपः शीघ्रं तडागम् उपगच्छति जयति च।

5. सही मेल मिलाइए :

क	ख
क. अस्मिन् चित्रे एकः	निरन्तरम् चलति विश्रामं न करोति च।
ख. सः मार्गे एकं	एव जयति।
ग. कच्छपः मन्दं मन्दं	कच्छपः शशकः च स्तः।
घ. निरन्तरम् यत्नशीलः	वृक्षं पश्यति, तत्र विरमति च।

(उत्तर, तीरों द्वारा: क → कच्छपः शशकः च स्तः।; ख → वृक्षं पश्यति, तत्र विरमति च।; ग → निरन्तरम् चलति विश्रामं न करोति च।; घ → एव जयति।)

कीजिए

'भू' (होना) धातु के लट् तथा ऌट् लकार के रूप लिखिए :

पुरुष		**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम	(लट्)	भवति	भवतः	भवन्ति
	(ऌट्)	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम	(लट्)	भवसि	भवथः	भवथ
	(ऌट्)	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम	(लट्)	भवामि	भवावः	भवामः
	(ऌट्)	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

दशमः पाठः — पण्डित जवाहरलाल नेहरूः

पण्डित जवाहरलाल नेहरू भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। इनके पिता श्री मोतीलाल नेहरू प्रसिद्ध विधिज्ञ (कानून के ज्ञाता) थे। इनकी माता श्रीमती स्वरूपरानी भी विदुषी महिला थी।

जवाहरलाल का जन्म सन् 1889 में नवम्बर मास की चौदहवीं तिथि (14-11-1889) में उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में हुआ था। वह उच्च शिक्षा के लिए ब्रिटेन गए। देश की स्वतन्त्रता के लिए वह महात्मा गाँधी के साथ कई बार जेल गए थे।

जवाहरलाल के शासन में देश की कीर्ति सब जगह फैली। विदेशी लोगों के साथ भारत के मधुर सम्बन्ध बने। कृषि विकसित हुई। भारत के विकास के लिए उन्होंने अनेक कृषि शिक्षा संस्थान वैज्ञानिक शिक्षा संस्थान और उद्योग स्थापित किए।

ये व्यवहार में बहुत सरल थे। बालक इनको 'चाचा नेहरू'' कहते हैं। डिस्कवरी ऑफ इण्डिया– (भारत एक खोज) जवाहरलाल की एक प्रसिद्ध रचना है। देश की सेवा में उन्होंने प्राण त्याग दिए।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. भारतस्य प्रथमः प्रधानमन्त्री 'पण्डित जवाहरलाल नेहरूः आसीत्।

ख. अस्य जन्म 1889 तमे ईसवीये वर्षे नवम्बरमासस्य चतुर्दशदिनांके उत्तरप्रदेशस्य इलाहाबाद नगरे अभवत्।

ग. सः अनेकवारं देशस्य स्वतन्त्रतायै कारागारम् अगच्छत्।

घ. भारतस्य विकासाय तेन अनेकानि कृषिशिक्षा संस्थानि, वैज्ञानिक शिक्षा संस्थानि उद्योगाः च संस्थापिताः।

ङ. बालकाः एतम् ''चाचा नेहरू'' इति वदन्ति।

2. खाली स्थान भरिए :

क. विधिज्ञः　　ख. आंग्लदेशम्　　ग. भारतस्य कीर्तिः

घ. व्यवहारे सरलः　　ङ. सेवायां प्राणान्

3. सही वाक्य के सामने 3 चिह्न लगाइए :

ख. 3 ग. 3

4. इन शब्दों के हिंदी/अंग्रेजी में अर्थ लिखिए :

कानून जानने वाले	हुआ	स्वतन्त्रता के लिए
फैल गई	उत्पन्न हुआ	विकास के लिए
रचना	बुद्धिमती महिला	उसके द्वारा

5. **इन विशेषणों के लिङ्ग लिखिएः**

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग
पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग

6. **पाठ से लङ् लकार की क्रियाएँ छाँटकर उनके पुरुष तथा वचन लिखिएः**

क्रिया–	आसीत्	अगच्छत्	अत्यजत्
पुरुष–	प्रथम पुरुष	प्रथम पुरुष	प्रथम पुरुष
वचन–	एकवचन	एकवचन	एकवचन
क्रिया–	अभवत्	अजायत्	
पुरुष–	प्रथम पुरुष	प्रथम पुरुष	
वचन–	एकवचन	एकवचन	

7. **इन शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए :**

विधि + अज्ञः	प्रदेश + अस्य
सम + उन्नता	संस्था + अनानि

8. **संस्कृत में अनुवाद कीजिए :**

क. नेहरू महोदयस्य जन्म इलाहाबाद नगरे अभवत्।

ख. सः अनेक वारं कारागारम् अगच्छत्।

ग. तस्य व्यवहारः अतिसरलः आसीत्।

घ. बालकाः तं "चाचा नेहरूः" इति अकथयन्।

ङ. सः अस्माकं प्रियः आसीत्।

एकादशः पाठः — दीपावलिः

भारतवर्ष त्योहारों का देश है। यहाँ प्रतिवर्ष अनेक उत्सव मनाए जाते हैं। उनमें कुछ राष्ट्रीय त्योहार (उत्सव) हैं और कुछ धार्मिक त्योहार हैं। इन उत्सवों में दीपावली नाम का उत्सव भारत का प्रमुख उत्सव है। यह उत्सव कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की अमावस्या तिथि में होता है।

कहा जाता है कि प्राचीन काल में अयोध्या के राजा दशरथ थे। उनके पुत्र श्रीराम चौदह वर्ष तक वन में रहे। वहाँ लंका के राजा रावण ने राम की पत्नी सीता का हरण कर लिया। श्रीराम ने रावण को मारा। इस प्रकार सीता रावण के बन्धन से मुक्त हुई।

इस दिन श्रीराम सीता और लक्ष्मण के साथ अयोध्या लौटे थे। उनके स्वागत में अयोध्या के निवासियों ने दीपक जलाए। तब से लेकर यह महान् उत्सव प्रतिवर्ष होता है।

इस उत्सव से पहले लोग अपने घरों को स्वच्छ बनाते हैं और चूने से पुताई करते हैं। वे नए वस्त्र धारण करते हैं।

इस दिन रात्रि में सब घरों में दीपक जलाते हैं और लक्ष्मी पूजन करते हैं। लोग मिठाइयाँ खाते हैं और मित्रों के लिए भेजते हैं। बालक पटाखों को चलाते हैं। सब प्रसन्न होते हैं।

इस दिन कुछ लोग जुआ खेलते हैं। यह खेल अच्छा नहीं होता है। यह खेल सर्वथा त्यागने योग्य है।

अभ्यासः *Exercise*

1. **संस्कृत में उत्तर लिखिए :**

क. दीपावलिः कार्तिकमासस्य कृष्णपक्षस्य अमावस्यायां तिथौ मान्यते।

ख. श्रीरामः चतुर्दशवर्षाणि वने अवसत्।

ग. लंकाधिपतिः रावणः सीताम् अपाहरत्।

घ. प्रतिवर्ष एषः महोत्सवः आयोजितः भवति।

ङ. अस्य उत्सवस्य पूर्वं जना स्वगृहाणि निर्मलानि कुर्वन्ति सुधालेपनं च कुर्वन्ति।

च. अस्मिन् दिने रात्रौ लक्ष्म्याः पूजा (लक्ष्मी पूजा) भवति।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए :

क. भारतस्य ख. रावणम् ग. स्वगृहाणि घ. दीपाः, लक्ष्मी पूजनं ङ. स्फोटकपदार्थान्, भवन्ति

3. इन वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखिए :

क. अयं उत्सवः कार्तिकमासस्य अमावस्यायां तिथौ भवति।

ख. रामः रावणम् अहन् सीता च बन्धनात् मुक्ता।

ग. सर्वे जनाः नूतनानि वस्त्राणि धारयन्ति।

घ. जनाः मिष्टान्नानि खादन्ति मित्रेभ्यः प्रेषयन्ति च।

ङ. अस्मिन् दिवसे केचित् जनाः द्यूतक्रीडां क्रीडन्ति।

4. इन शब्दों की संस्कृत लिखिए :

पर्वणाम्	अहन्	नूतनानि
द्यूतः	मिष्टान्नानि	निर्मलम्
कथ्यते	राष्ट्रियः	प्रत्यागच्छत्

5. इन शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

कुछ	अत्र केचन छात्राः पुस्तकानि पठन्ति।
हर ली	लंकाधिपति रावणः सीताम् अपाहरत्।
दीपिकों को	दीपावलि उत्सवे जनाः दीपान् प्रज्वालयन्ति।
मिठाइयाँ	मम पिता आपणात् मिष्ठान्नानि आनयत्।
छोड़ने योग्य	अस्माभिः प्राचीन-परम्परा न त्याज्याः।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

अस्माकं देशे अनेके उत्सवाः मान्यन्ते।

दीपावलिः हिन्दूनां प्रमुखः उत्सवः अस्ति।

रावणः वने सीतायाः हरणम् अकरोत्।

अस्मिन् दिने गृहेषु दीपाः प्रज्वाल्यन्ते।

जनाः मित्राणां गृहेषु मिष्टान्नानि प्रेषयन्तिः।

द्वादशः पाठः — ग्राम्य जीवनम्

यह मेरा गाँव है। मेरा गाँव बहुत ही रमणीय है। मेरे गाँव का नाम रामपुर है। रामपुर मुजफ्फरनगर जनपद में है। मेरे गाँव में अनेक किसान रहते हैं। उनका जीवन सरल और शुद्ध होता है। सब किसान खेती करते हैं। वे हल से खेतों को जोतते हैं, फिर बीज बोते हैं और पानी से खेतों को सींचते हैं। किसान गाड़ी से भार ले जाते हैं। (सामान की ढुलाई करते हैं)। गाँव की जलवायु बहुत रमणीय (सुन्दर) होती है। गाँव में बहुत पेड़ हैं। यहाँ प्रदूषण रहित शीतल वायु बहती है।

गाँव में एक विद्यालय है। हम यहाँ पढ़ते हैं। विद्यालय के अध्यापक मनोयोग से (मन लगाकर) छात्रों को पढ़ाते हैं। विद्यालय के (क्रीड़ांगन) खेल के मैदान में बालक गेंद से खेलते हैं।

गाँव के बीच में एक उपवन है। यहाँ अनेक वृक्ष हैं। उपवन में सुन्दर फूल खिलते हैं और सुगन्ध फैलाते हैं। गाँव के दोनों ओर दो नदियाँ हैं।

गाँव में एक पंचायत भी है। पंचायत में पाँच सदस्य होते हैं। हमारे ग्राम प्रधान बहुत सज्जन हैं। सभी सदस्य गाँव के विकास के लिए कार्यों को करते हैं।
गाँव का जीवन श्रेष्ठ होता है। ग्राम्य जीवन सदाचार से सम्पन्न और धार्मिक होता है। गाँव के लोग श्रेष्ठ होते हैं। सब लोग गाँव का विकास चाहते हैं। मेरा गाँव एक आदर्श गाँव है।

अभ्यासः Exercise

1. दिए गए अनुच्छेद का अर्थ लिखिएः

गाँव का जीवन श्रेष्ठ होता है। ग्राम्य जीवन सदाचार युक्त और धार्मिक होता है। गाँव के लोग श्रेष्ठ होते हैं। सब लोग गाँव का विकास चाहते हैं। मेरा गाँव एक आदर्श गाँव है। गाँव की जलवायु भी बहुत रमणीय होती है। गाँव में बहुत पेड़ हैं। यहाँ प्रदूषण रहित शीतल वायु बहती है।

2. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. कृषकाः ग्रामेषु निवसन्ति। ते हलेन क्षेत्राणि कर्षन्ति, बीजानि वपन्ति जलेन क्षेत्राणि सिञ्चयन्ति शकटेन च भारं नयन्ति।

ख. ग्रामस्य जलवायुः प्रदूषणरहितः भवति।

ग. बालक-बालिकाश्च विद्यालये पठन्ति क्रीडाङ्गने च क्रीडन्ति।

घ. ग्राम पञ्चायतने पञ्च सदस्याः तिष्ठन्ति।

ङ. ग्रामस्य जनाः श्रेष्ठाः सन्ति।

3. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए :

क. कृषिकार्यं ख. जलवायुः, भवति ग. मनोयोगेन घ. विकासकार्याणि ङ. ग्राम्यजीवनं,धार्मिकं

4. सही वाक्यों के सामने 3 चिहन लगाइए :

ग. 3 घ. 3 ङ 3

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. ग्रामे अनेके जनाः निवसन्ति।

ख. ते सर्वे कृषिकार्यं कुर्वन्ति।

ग. मम ग्रामे एकः विद्यालयः अपि अस्ति।

घ. उद्याने अनेके वृक्षाः सन्ति।

ङ. अस्माकं ग्रामः एकः आदर्शः ग्रामः अस्ति।

6. इन शब्दों की विभिक्ति और वचन लिखिएः

विभक्ति	वचन	विभक्ति	वचन
षष्ठी	एकवचन	तृतीया	एकवचन
द्वितीया	बहुवचन	प्रथमा/द्वितीया	बहुवचन
प्रथमा/द्वितीया	एकवचन	प्रथमा	बहुवचन

त्रयोदशः पाठः सूक्तिसञ्चयः

1. विद्यारूपी धन सब धनों में प्रधान होता है।
2. सज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकार के लिए ही होती है।
3. धूर्त के साथ धूर्तता का ही आचरण करना चाहिए।
4. उदार चरित्र वाले लोगों के लिए तो सारी पृथ्वी ही एक परिवार (के समान) होती है।
5. क्षमा के समान कोई तप नहीं है।

6. क्रमपूर्वक पानी की बूँद-बूँद गिराने से घड़ा धीरे-धीरे भर जाता है।
7. विद्वान की (सर्वत्र) प्रत्येक स्थान पर पूजा होती है।
8. सत्य ही विजयी होता है असत्य नहीं।
9. विद्या व्यक्ति को विनम्र बनाती है। विनय प्रदान करती है।
10. जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान् है।
11. मनुष्य परिश्रम से सफलता (सिद्धि) को प्राप्त करता है।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. विद्याधनं प्रधानम्।
ख. सत्यमेव जयते।
ग. विद्वान सर्वत्र पूज्यते।
घ. विद्या विनयं ददाति।
ङ. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

2. इन वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए :

क. सज्जनों की सम्पत्तियाँ परोपकार के लिए होती हैं।
ख. मनुष्य परिश्रम से सफलता पाता है।
ग. क्षमा के बराबर कोई तप नहीं है।
घ. उदारचरित्र वाले लोगों के लिए सारी पृथ्वी ही एक परिवार होती है।

3. हिंदी में अर्थ लिखिए :

सम्पत्तियाँ	गिराने से	विनम्रता
महान्	धूर्तता	भर जाता है

4. इन शब्दों की संस्कृत लिखिए :

सताम्	कुटुम्बः	सर्वत्र
परिश्रमेण	जननी	नानृतम्

5. संधि-विच्छेद कीजिए:

न	+	अनृतम्	स्वर्गात्	+	अपि
वसुधा	+	एव	देव	+	ऋषिः

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. आचार्य देवो भव।
ख. विद्या विनयं ददाति।
ग. सदाचारः प्रथमः धर्मः अस्ति।
घ. सत्यस्य एव विजयः भवति।

चतुर्दशः पाठः — रक्षकः भक्षकात् प्रशस्यतरः

कौशल देश में सिद्धार्थ नाम का एक राजकुमार था। एक बार वह उपवन में घूम रहा था। उपवन की शोभा मनोहर थी। बहुत-से पक्षी वहाँ कलरव कर रहे थे और राजहंस विचरण कर रहे थे। उन पक्षियों में कुछ जलों में, कुछ भूमि पर और कुछ पेड़ों पर थे।

अचानक एक राजहंस पेड़ से गिरा। वह राजहंस बाण से घायल था। वह पीड़ा से करुण-क्रन्दन (चीत्कार) कर रहा था। उसके क्रन्दन को सुनकर सिद्धार्थ दुःखी हुआ।

वह उसे लेकर कुटी में गया और उसकी सेवा की। जब वह हंस उसकी सेवा से स्वस्थ हो गया तभी देवदत्त वहाँ आया और बोला– ''यह मेरा हंस है।''

सिद्धार्थ बोला– ''यह मेरा है। मैं इसे नहीं दूँगा।''
इस प्रकार उन दोनों राजकुमारों में महान् विवाद हुआ। वे दोनों निर्णय के लिए राजा शुद्धोधन की सभा में गए। वहाँ उन दोनों ने अपना-अपना पक्ष बताया। राजा ने सारा वृतान्त सुना और निर्णय किया– रक्षा करने वाला भक्षक (खाने वाले) से अधिक प्रशंसनीय होता है।
सिद्धार्थ इसका रक्षक है, देवदत्त तो प्राणघातक (मारने वाला) है। इसलिए यह हंस सिद्धार्थ का ही है न कि देवदत्त का।

अभ्यासः *Exercise*

1. इस अनुच्छेद का हिंदी-अनुवाद कीजिएः

अचानक एक राजहंस पेड़ से गिरा। वह राजहंस बाण से घायल था। वह पीड़ा से करुण-क्रन्दन कर रहा था। उसके क्रन्दन को सुनकर सिद्धार्थ दुःखी हुआ। वह उसे लेकर कुटी में गया और उसकी सेवा की। जब वह हंस उसकी सेवा से स्वस्थ हो गया तभी देवदत्त वहाँ आया और बोला– ''यह मेरा हंस है।''

2. संस्कृत में उत्तर लिखिएः

क. सिद्धार्थः उपवने अभ्रमत्।
ख. उपवने खगाः कलरवं कुर्वन्ति स्म।
ग. राजहंसः शरेण आहतः आसीत्।
घ. सिद्धार्थः देवदत्तम् अवदत्– ''अयं ममास्ति। अहं इमं न दास्यामि।''
ङ. हंसस्य रक्षकः सिद्धार्थः आसीत्।
च. नृप निर्णयम् अकरोत्– ''रक्षकः भक्षकात् प्रशस्यतरः भवति''। अतएव अयं हंसः सिद्धार्थस्य एव अस्ति न तु देवदत्तस्य।

3. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए

क. मनोरमा ख. राजहंसः ग. कुटीरम् घ. तौ ङ. अशृणोत्, रक्षकः

4. इन वाक्यों को घटनाक्रम के अनुसार लिखिएः

क. एकदा सिद्धार्थः उपवने अभ्रमत्।
ख. बहवः खगाः तत्र कलरवं कुर्वन्ति स्म।
ग. सहसा एकः राजहंसः वृक्षात् अपतत्।
घ. सः राजहंसः शरेण आहतः आसीत्।
ङ. तस्य क्रन्दनं श्रुत्वा सिद्धार्थः दुःखितः अभवत्।
च. तदैव देवदत्तः तत्र आगच्छत्।
छ. एवं तयोः राजकुमारयोः विवादः अभवत्।

5. सही मेल मिलाइएः

	पीडया करुण-क्रन्दनं	वृक्षेषु आसन्।
सः	केचन जलेषु, केचन च	दुःखितः अभवत्।
तेषु	क्रन्दनं श्रुत्वा सिद्धार्थः	करोति स्म।
तस्य	एकदा उपवने	स्वस्थः अभवत्।
	हंसः तस्य सेवयाः	अभ्रमत्।

6. दिए शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिएः

उपवन में	अहं प्रातःकाले उपवने भ्रमामि।
चहचहाना	उपवने खगाः कलरवं कुर्वन्ति।
बाण से	राजहंसः शरेण आहतः आसीत।

निर्णय के लिए	द्वौ राजकुमारौ निर्णयाय राजसभायाम् अगच्छताम्।
सुना	नृपः शुद्धोधनः सर्व वृतान्तम् अशृणोत्।

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. वयं ह्यः भ्रमणाय अगच्छाम।
ख. तत्र वयं सुन्दरान् खगान् अपश्याम।
ग. यूयं ह्यः किम् अकुरुत।
घ. सः कलमेनं लिखति।
ङ. राजकुमारः हंसाय जलम् आनयत्।

8. इन वाक्यों को लृट् लकार (भविष्यत् काल) में बदलकर लिखिएः

क. बालिका पत्रिकां पठिष्यति।
ख. ते कन्दुकेन क्रीडिष्यन्ति।
ग. सः उपवने भ्रमिष्यति।
घ. अहं गृहं गमिष्यामि।
ङ. युवां दुग्धं पास्यथः।

9. इन क्रियाओं की धातु, पुरुष एवं वचन लिखिएः

धातु	पुरुष	वचन
अस्	प्रथम	एकवचन
अस्	प्रथम	बहुवचन
भू	प्रथम	एकवचन
वद्	प्रथम	एकवचन
आ + गम्	प्रथम	एकवचन
पठ्	उत्तम	एकवचन

पञ्चदशः पाठः अम्लानि सन्ति द्राक्षाफलानि

किसी वन में एक प्रशंसनीय पेड़ था। उसके ऊपर अंगूर की बेल चढ़ी हुई थी। वहाँ एक लुब्धक नाम वाला सियार रहता था। एक बार भूखा सियार इधर-उधर घूमता हुआ उस पेड़ के पास आया। भोजन के अभाव से बहुत पीड़ित हुए उस सियार ने पेड़ के ऊपर अंगूर की बेल को देखा। लता पर अंगूर के फलों को देखकर उसने सोचा– यह द्राक्षामण्डप बहुत ऊँचा है। मैं किस प्रकार इन्हें खाऊँ? ऊँचे स्थान पर स्थित अंगूरों के गुच्छों को देखकर सियार बहुत ज्यादा दुःखी हुआ।

इस बीच उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ– उछलने से शायद ये फल प्राप्त हो सकें। क्योंकि कार्य उद्यम (परिश्रम) करने से ही सफल होते हैं। केवल मनोरथ से नहीं। वह पूरे प्रयत्न से बार-बार ऊपर उछला (कूदा), किन्तु द्राक्षाफलों (अंगूरों) को प्राप्त नहीं कर पाया। बार-बार उछलने से भी उसे अंगूर उपलब्ध नहीं हुए।

और इस तरह सियार बहुत थक गया। उन्हें प्राप्त करना असम्भव मानकर सियार ने अंगूरों की निन्दा की। वह बोला– ''अंगूर खट्टे हैं, ये मुझे अच्छे नहीं लगते।'' यह कहकर सियार वन में कहीं और स्थान पर चला गया।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. शृगालः लुब्धकः नाम आसीत्?
ख. शृगालः भोजनाभावेन अतीव दुखितोऽभवत्।

ग. श्रृगालः अप्राप्यानि मत्वा द्राक्षाफलानि अनिन्दत्।

घ. श्रृगालः इदं कथयित्वा द्राक्षाफलानि अनिन्दत्– अम्लानि सन्ति द्राक्षाफलानि एतानि मह्यम् न रोचन्ते।

2. दिए गए अनुच्छेद का हिंदी में अर्थ लिखिएः

एक बार भूखा सियार इधर-उधर घूमता हुआ उस पेड़ के पास आया। भोजन के अभाव से अत्यधिक पीड़ित हुए उस सियार ने पेड़ के ऊपर अंगूर की बेल को देखा। लता पर अंगूर के फलों को देखकर उसने सोचा– यह द्राक्षामण्डप बहुत ऊँचा है। मैं किस प्रकार इन्हें खाऊँ?

3. इन शब्दों के अर्थ लिखिएः

अंगूर की बेल	भूखा	गुच्छों को
इसी बीच	परिश्रम से	खट्टे
ऐसा कहकर	इधर-उधर	प्रशंसनीय

4. इन शब्दों की संस्कृत लिखिएः

श्रृगालः	वृक्षोपरि	उत्पतनेन
पौनः पुन्येन	थकितः/श्रान्तः	अन्यत्र
दृष्ट्वा	अस्ति	वने

5. खाली स्थान भरिएः

क. पीडितः, द्राक्षालताम् ख. एतानि फलानि ग. उदपतत्, द्राक्षाफलानि

घ. अतिश्रान्तः अभवत्। ङ. अम्लानिद्राक्षाफलानि, मह्यम्

6. संधि-विच्छेद कीजिएः

तस्य	+ उपरि	समीप	+ अगच्छत्
भोजन	+ अभावेन	वृक्षस्य	+ उपरि
उच्चतरः	+ अयम्	दुःखितः	+ अभवत्
इति	+ उक्तवा	अन्यत्र	+ अगच्छत्

7. पढ़िए, समझिए और कीजिएः

		हसित्वा	हँसकर
श्रुत्वा	सुनकर	पठित्वा	पढ़कर
गत्वा	जाकर	लिखित्वा	लिखकर

8. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. वयम् उपवनम् गमिष्यामः।

ख. वने एकः सिंहः अवसत्।

ग. सः अतीव बुभुक्षितः आसीत्।

घ. भोजनस्य अन्वेषणे सः इतस्ततः अभ्रमत्।

ङ. एतानि द्राक्षाफलानि अम्लानि सन्ति।

9. इन क्रियाओं की धातु, लकार (काल), पुरुष तथा वचन लिखिएः

धातु	**लकार**	**पुरुष**	**वचन**
गम्	लङ्	प्रथम	एकवचन
दृश्	लट्	प्रथम	एकवचन
खाद्	लृट्	मध्यम	बहुवचन
दृश्	लङ्	प्रथम	बहुवचन
स्मृ	लट्	उत्तम	द्विवचन
भू	भू	मध्यम	द्विवचन

एक वन में एक शेर रहता था। एक बार वह बहुत अधिक भोजन करके एक पेड़ की छाया में सुख से सो गया। वहाँ एक चूहा बिल से निकलकर शेर के शरीर पर इधर-उधर कूदने लगा। उस कारण शेर जाग गया।

उसने चूहे पर क्रोध किया और उसे पकड़ लिया, तब वह चूहा विनयपूर्वक बोला– ''हे वनराज! मेरा अपराध क्षमा करो, मुझ पर दया करो। तुम तो वन के राजा हो। तुम्हारा पराक्रम प्रसिद्ध है। मैं तो तुच्छ प्राणी हूँ। मुझे छोड़ दो। समय आने पर मैं भी तुम्हारी सहायता करूगाँ। उसके इस वचन को सुनकर शेर अपने मन में हँसा और बोला– ''यह छोटा-सा जीव मेरी क्या सहायता करेगा? परन्तु कुछ सोचकर उस चूहे को छोड़ दिया।

एक दिन वह शेर शिकारी के जाल से बँध गया। जाल में बँधा हुआ शेर दुःखी होकर बार-बार उच्च स्वर से दहाड़ रहा था। उसकी दहाड़ को सुनकर चूहा वहाँ आया।

शेर को जाल से बँधा हुआ देखकर वह चूहा बोला– ''हे वनराज! मैं इस जाल से तुमको छुड़ाता हूँ। यह कहकर उसने शीघ्र ही उस जाल को दाँतों से काट डाला। शेर स्वतन्त्र हो गया। स्वतन्त्र होकर शेर ने चूहे से कहा– 'हे मित्र! आज मैं समझ गया हूँ कि तुच्छ (छोटा) प्राणी भी उपयोगी होता है।''

''अच्छा मित्र विपत्ति के समय भी सहायता करता है।''

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिएः

क. अरण्ये एकः सिंहः अवसत्।

ख. मूषकः सिंहस्य शरीरे अकूर्दत्।

ग. मूषकः सिंहम् अवदत्– ''भो वनराज! मम अपराधं क्षमस्व। मयि दयां कुरु।''

घ. सिंहः व्याधस्य जाले पतितः।

ङ. सिंहस्य जालं मूषकः अकृन्तत्।

च. स्वतन्त्र भूत्वा सिंहः मूषकम् अवदत्– ''भो मित्र! अद्य अहम् अवगच्छामि यत् क्षुद्रः जन्तुः अपि उपयोगी भवति'' इति।

2. सही शब्द द्वारा खाली स्थान भरिएः

क. छायायाम् ख. मूषकाय, अगृहणात् ग. अहमपि, सहायतां घ. व्याधस्य, बद्धः ङ. सत्वरं, दन्तैः

3. सही वाक्य के सामने 3 चिह्न लगाइएः

क. 3 ग. 3

4. संधि कीजिएः

प्रभूतमाहारं	तमगृहणात्
अहमपि	तत्रागच्छत्
इत्युक्त्वा	नृपोऽसि

5. इन शब्दों की विभक्ति और कारक लिखिएः

षष्ठी	सम्बन्ध	पञ्चमी	अपादान
तृतीया	करण	विचिन्त्य	इसमें प्रत्यय है, कारक नहीं
तृतीया	करण	अष्टमी	सम्बोधन

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. वने एकः सिंहः अवसत्।

ख. मूषकः सिंहस्य शरीरे अकूर्दत्।
ग. अहं तव सहायतां करिष्यामि।
घ. सिंहः जाले बद्धः।
ङ. मूषकः स्वदन्तैः जालम् अकृन्तत्।

7. इन शब्दों का अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

बहुत	राजा याचकाय प्रभूतं धनम् अयच्छत्।
करो	मूषकः सिंहम् अवदत्– मयि दयां कुरु।
सुनकर	मधुरं संगीतं श्रुत्वा सर्वे जनाः प्रसन्नाः जाताः।
चूहा	मूषकः अतीव चञ्चलः जीवः अस्ति।
शीघ्र	मूषकः स्वदन्तैः सत्वरं जालम् अकृन्तत्।

सप्तदशः पाठः — व्याकरणम्

अभ्यासः Exercise

1. पर्यायवाची लिखिए:

Write synonym:

अम्बरम्	–	आकाशः	गगनं	व्योमः	वियत्, खः
कमलम्	–	नीरजम्	पङ्कजम्	अम्बुजम्	सरोजम्
चन्द्रः	–	रजनीकरः	इन्दुः	निशाकरः	शशिः
पुत्रः	–	तनयः	आत्मजः	वत्सः	सुतः
लक्ष्मीः	–	श्रीः	क्षीरतनया	पद्मा	सिन्धुजा

2. विलोम लिखिए:

अल्पम्	शीतम्	प्रकाशः
सच्चरित्रः	पुण्यम्	कटुः
असत्यम्	अल्पायुः	पण्डितः/विद्वान/प्राज्ञः
अधर्मः	पराजयः	अपयशः

अभ्यासः Exercise

1. 'वृक्ष' और 'लता' शब्द के रूप लिखिए:

'वृक्ष'			'लता'		
एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
वृक्षः	वृक्षौ	वृक्षाः	लता	लते	लताः
वृक्षम्	वृक्षौ	वृक्षान्	लताम्	लते	लताः
वृक्षेण	वृक्षाभ्याम्	वृक्षैः	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
वृक्षाय	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
वृक्षात्	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
वृक्षस्य	वृक्षयोः	वृक्षाणाम्	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
वृक्षे	वृक्षयोः	वृक्षेषु	लतायाम्	लतयोः	लतासु
हे वृक्ष!	हे वृक्षौ!	हे वृक्षाः!	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

2. इन शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिएः

विभक्ति	**वचन**	**विभक्ति**	**वचन**
षष्ठी	एकवचन	प्रथमा/द्वितीया	द्विवचन
तृतीया	एकवचन	तृतीया	बहुवचन
तृतीया	बहुवचन	प्रथमा/द्वितीया	बहुवचन
चतुर्थी	एकवचन	प्रथमा/द्वितीया	द्विवचन
तृतीया	एकवचन	षष्ठी	बहुवचन
प्रथमा	बहुवचन	चतुर्थी/पंचमी	बहुवचन

अष्टादशः पाठः — अस्माकं राष्ट्रियप्रतीकानि

राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा	राष्ट्रीय चिह्न चार शेर	राष्ट्रीय पक्षी मोर
राष्ट्रीय पुष्प कमल	राष्ट्रीय क्रीड़ा हॉकी	राष्ट्रीय पशु व्याघ्र (चीता)
राष्ट्रीय फल आम		

राष्ट्रीय-गान	जन-गण-मन अधिनायक जय हे।
राष्ट्रीय गीत	वन्दे मातरम्।
राष्ट्रीय वाक्य	सत्यमेव जयते।

प्रथमः पाठः — स्तुतिः

अर्थ- जो देवी सभी प्राणियों में बुद्धि रूप में विद्यमान रहती है। उस देवी को नमस्कार करता हूँ, नमस्कार करता हूँ, बार-बार नमस्कार करता हूँ।

जो सरस्वती माता हाथ में स्फटिकमणि की माला लिए रहती है, कमल के आसन पर विराजमान होती है और बुद्धि देने वाली है, उस आद्य परमेश्वरी भगवती सरस्वती की वंदना करता हूँ।

अभ्यासः Exercise

1. **संस्कृत में उत्तर लिखिए :**
   - क. या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
   - ख. शारदया हस्ते स्फाटिकमालिकाम् अस्ति।
   - ग. देवी शारदा सर्वभूतेषु संस्थिता।
   - घ. बुद्धिप्रदां शारदा अस्ति।
2. **दिए गए श्लोक का हिंदी में अर्थ लिखिए :**

   जिसके हाथ में स्फटिक मणियों की माला है या धारण किए हैं जो कमल के आसन पर विराजमान है, मैं उस बुद्धि प्रदान करने वाली परमेश्वरी शारदा को प्रणाम करता हूँ।
3. **खाली स्थान भरिए :**
   - क. या देवी **सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण** संस्थिता।
नमस्तस्यै **नमस्तस्यै नमस्तस्यै** नमो नमः।।
   - ख. हस्ते **स्फाटिकमालिकाम** विदधतीं **पदमासने संस्थिताम्**।
वन्दे तां **परमेश्वरीं भगवतीं** बुद्धिप्रदां **शारदाम्**।
4. **हिंदी में अर्थ लिखिए:**

सभी प्राणियों	बुद्धिरूप में	स्थित है
पहने हुए है	कमल के आसन पर	उस
बुद्धि देने वाली	शारदा को	हाथ में

5. **संधि-विच्छेद कीजिए :**

नम + स्तस्यै	पद्म + आसने
परम + ईश्वरीं	बुद्धि + रूपेण

द्वितीयः पाठः — अस्माकं भारतवर्षम्

अर्थ- यह हमारा भारतवर्ष है। हम सब भारतवर्ष में रहते हैं। यहाँ वैदिक, जैन, बौद्ध, सिक्ख, इस्लाम, क्रिश्चियन आदि अनेक धर्म हैं तथा यहाँ अनेक प्रकार की जातियाँ निवास करती हैं। सभी लोग भेदभाव को त्यागकर मित्रतापूर्वक व्यवहार करते हैं।

भारतवर्ष पहले सभी देशों में उन्नत (श्रेष्ठ) था। किन्तु दुर्भाग्य से विदेशियों द्वारा पराधीन हो गया। सन् 1947 ई0 में भारतवर्ष स्वतंत्र हो गया। अब भारतवर्ष में लोकतंत्र है। लोकतंत्र में प्रजा ही अपने नायक का चुनाव कर शासन करती है।

भारतवर्ष की उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत है। वह भारतवर्ष के मुकुट में मणि की तरह सुशोभित है।

हिमालय प्रहरी की तरह हमारी शत्रुओं से रक्षा करता है। पश्चिम दिशा में पाकिस्तान नाम का देश है। पूर्व और दक्षिण दिशा में दो समुद्र भारतवर्ष के पैरों को धोते हैं।

भारतवर्ष में ही श्रीराम, श्रीकृष्ण, भगवान महावीर, महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानंद, विवेकानंद तथा दूसरे अनेक महापुरुष हुए। भारतवर्ष हमें प्राणों से भी प्रिय है। वास्तव में हम सब भारतवासी धन्य हैं।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. वयं भारतवर्षे वसामः।

ख. 1947 तमे वर्षे भारतवर्षम् स्वतन्त्रम् अभवत्।

ग. लोकतन्त्रे प्रजा एवं स्वनायकस्य निर्वाचनं करोति या कृत्वा शासनं करोति।

घ. भारतवर्षस्य उत्तरस्यां दिशि हिमालयः पर्वतः अस्ति।

ङ. हिमालयः प्रहरी इव रक्षां करोति।

च. भारतीयाः जनाः धन्या सन्ति।

2. उचित शब्दों द्वारा खाली स्थान भरिए :

क. त्यक्त्वा सौहार्देन ख. लोकतन्त्रं ग. मुकुटमणिः घ. पाकिस्तानं ङ. प्राणेभ्यः; प्रियम्

3. सही वाक्यों के सामने 3 चिह्न लागइए:

क. 3 ख. 7 ग. 3 घ. 3

4. इस अनुच्छेद का अर्थ अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए :

भारतवर्ष की उत्तर दिशा में हिमालय पर्वत है। वह भारतवर्ष के मुकुट में मणि की तरह सुशोभित है। हिमालय प्रहरी की तरह हमारी शत्रुओं से रक्षा करता है। पश्चिम दिशा में पाकिस्तान नाम का देश है। पूर्व और दक्षिण दिशा में दो समुद्र भारतवर्ष के पैरों को धोते हैं। भारतवर्ष हमें प्राणों से भी प्रिय है।

5. इन शब्दों का हिंदी में अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

भारतवर्षे	भारतवर्ष में	भारतवर्षे अनेके महापुरुषाः अभवन्।
सौहार्देन	मित्रता से	वयं सर्वेजनाः सौहार्देन निवसामः।
दुर्भाग्यात्	दुर्भाग्य से	दुर्भाग्यात् भारतवर्षे वैदेशिकैः पराधीनम् कृतम्।
प्रहरी	पहरेदार	हिमालयः प्रहरी इव रक्षां करोति।
महापुरुषाः	महापुरुष	भारतवर्षे अनेके महापुरुषाः सन्ति।
भारतवर्षीयाः	भारतीय	वयं भारतीयाः स्मः।

6. इन शब्दों की विभक्ति, लिङ्ग और वचन लिखिए :

शब्द	**विभक्ति**	**लिङ्ग**	**वचन**
धर्माः	प्रथमा	पुंल्लिंग	बहुवचन
सौहार्देन	तृतीया	पुंल्लिंग	एकवचन
वैदेशिकैः	तृतीया	पुंल्लिंग	बहुवचन
नायकस्य	षष्ठी	पुंल्लिंग	एकवचन
पादौ	प्रथमा/द्वितीया	पुंल्लिंग	द्विवचन
प्राणेभ्यः	चतुर्थी /पंचमी	पुंल्लिंग	बहुवचन

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. वयं भारतीयाः स्मः।

ख. हिमालयः भारतस्य प्रहरी अस्ति।

ग. भारतवर्षे अनेके महापुरुषाः अभवन्।

घ. 1947 तमे वर्षे भारतवर्षं स्वतन्त्रम् अभवत्।

ङ. वयं स्वदेशे गर्वम् अस्ति।

तृतीयः पाठः — अस्माकं महापुरुषाः

अर्थ- भारतवर्ष में समय-समय पर अनेक महापुरुष हुए। उनमें महात्मा गाँधी, वल्लभभाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, दयानन्द, तिलक, सरोजिनी नायडू आदि प्रसिद्ध हैं।

महात्मा गाँधी महोदय विश्व प्रसिद्ध महान व्यक्ति थे। इसका जन्म सन् 1869 ई0 में अक्टूबर मास की 2 दिनाङ्क को काठियावाड़ प्रान्त के पोरबन्दर नगर में हुआ। इनके पिता का नाम करमचन्द और माता का नाम पुतलीबाई था। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचन्द गाँधी था।

महात्मा का जीवन सदाचारपूर्ण था। वह सदैव सत्य बोलते थे। सत्य और अहिंसा उनके दो बड़े अस्त्र थे। भारतीय लोगों के प्रति विदेशी लोगों के अत्याचार को देखकर गाँधी का मन बड़ा दुःखी हुआ। उन्होंने सत्याग्रह और अहिंसा के हथियार से परतन्त्र भारत को स्वतन्त्र किया। उन्होंने भारत की स्वतन्त्रता के लिए सत्याग्रह आन्दोलन, नमक आन्दोलन ऐसे अनेक आन्दोलन किए। भारतीय उन्हें प्यार और श्रद्धा से बापू कहते हैं। इनकी मृत्यु 30 जनवरी, 1948 ई0 को हुई।

यह सरदार वल्लभभाई पटेल हैं। बैरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण कर वह लोक सेवा में लग गए। इनकी योग्यता को देखकर महात्मा गाँधी ने इनको सरदार की उपाधि से सम्बोधित किया। पत्रकारों ने इनको 'लौह पुरुष' नाम दिया। स्वतन्त्र भारत में यह सरकार के पहले गृहमन्त्री हुए। अपने शासनकाल में अनेकों राजाओं के राज्यों को समाप्त कर भारत राष्ट्र में मिला लिया।

यह डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद हैं। इनका जन्म सन् 1884 ई0 में 3 दिसम्बर को बिहार प्रान्त में जीरादेइ गाँव में हुआ। बचपन से ही वह बुद्धिमान छात्र था।

प्राथमिक पाठशाला में उन्होंने हिन्दी, संस्कृत का अध्ययन किया। सभी परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर राजेन्द्र प्रसाद ने अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। राजेन्द्र प्रसाद का व्यक्तित्व बहुत सरल था। वह महान कानूनविद, विद्वान विचारक और देशभक्त थे। सन् 1920 ई0 में वह महात्मा गाँधी के आह्वान पर देश की सेवा में लग गए। हमारे स्वतन्त्र भारत के पहले राष्ट्रपिता माननीय डा0 राजेन्द्र प्रसाद थे। उसने देश के हित (भलाई) के लिए अनेक कार्य किए।

महर्षि दयानन्द का जन्म टंकारा गाँव में हुआ। बचपन में इनका नाम मूलशंकर था। दयानन्द के दीक्षा गुरु परिपूर्णानन्द थे। दीक्षा के उपरान्त वह दयानन्द सरस्वती के नाम से प्रसिद्ध हुए।

दयानन्द आर्य समाज के संस्थापक थे। दयानन्द ने तीन वर्षों तक मथुरा नगरी में श्री विरजानन्द से शास्त्र पढ़े।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक वास्तव में देशभक्तों के शिरोमणि थे। तिलक का जन्म महाराष्ट्र राज्य के रत्नागिरि जनपद के चिरबल नाम के गाँव में हुआ। उनके पिता गंगाधर कुशल अध्यापक और लेखक थे। उनकी माता पार्वतीबाई अत्यधिक सुशील और ईश्वर भक्त थीं।

तिलक महोदय महान् देशभक्त थे। यह महान विचारक बोलने में कुशल और राजनीति को जानने वाले थे। यह गणित और संस्कृत के महान् विद्वान थे। तिलक गणित के कठिन प्रश्नों का भी मौखिक ही उत्तर देते थे।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में वह कारागार गए। स्वतन्त्रता आन्दोलन के विषय में लोकमान्य ने घोषणा की कि ''स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह वाक्य स्वाधीनता आन्दोलन का मुख्य घोषणा वाक्य हुआ। यह देशभक्त सन् 1920 ई0 को दिवंगत हो गए।

यह कौन है? यह 'भारतकोकिला' श्रीमती सरोजिनी नायडू महोदया हैं। यह राजनीति में कुशल महिला थीं। वह मधुर बोलने वाली विदुषी और कवयित्री थीं। इन्होंने राष्ट्रहित के लिए प्रशंसनीय कार्य किए। यह स्वतन्त्रता संग्राम में बार-बार कारागार गईं और बहुत से कष्ट सहन किए।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. महात्मागान्धिनः जन्म 1869 तमे वर्षे पोरबन्दर नगरे अभवत्।
ख. तस्य मातुः नामु पुतलीबाई, पितुः नाम करमचन्द च आसीत्।
ग. भारतवर्षस्य स्वतन्त्रतायै सः सत्याग्रहं लवणं च इति अनेकानि आन्दोलनानि अकरोत्।
घ. 'स्वकीये' कार्यकाले सरदार पटेलः अनेकानि राज्यानि समाप्य भारतसंघे सम्मेलितेवान्।
ङ. डा0 राजेन्द्रप्रसादः जन्म 1884 तमे वर्षे बिहार प्रान्ते जीरादेइ ग्रामे अभवत्।
च. स्वतन्त्र भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः डा0 राजेन्द्र प्रसादः आसीत्।
छ. दयानन्दस्य दीक्षागुरुः श्री परिपूर्णानन्दः आसीत्।
ज. तिलक महाभागः 'स्वराज्यम् अस्माकं जन्मसिद्धः अधिकारः' इति घोषणाम् अकरोत्।
झ. श्रीमती सरोजिनी नायडूः राज्यपालपदम् भूषयत्।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिएः

क. सदाचारपूर्णम् ख. दृष्ट्वा; 'सरदार'; सम्बोधितवान ग. देशहिताय अनेकानि घ. आर्यसमाजस्य ङ. विचारकः; राजनीतिज्ञः च. राष्ट्रहिताय प्रशंसनीयं

3. इन वाक्यों का हिंदी-अनुवाद कीजिए :

क. भारतीय लोगों के प्रति विदेशी लोगों के अत्याचार को देखकर गाँधी जी का मन बहुत दुखी हुआ।
ख. स्वतंत्र भारत में यह सरकार के पहले गृहमंत्री हुए।
ग. राजेन्द्र प्रसाद का व्यक्तित्व बहुत सरल था।
घ. तिलक गणित और संस्कृत के महान विद्वान थे।
ङ. श्रीमती सरोजिनी नायडू स्वतंत्रता संग्राम में बार-बार कारागार गईं।

4. इन शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखिए :

सरकार में	समाप्त कर	कानून को जानने वाले
वास्तव में	बोलने में चतुर	घोषणा की
कुशल	अपने में	मिला दिया

5. संधि-विच्छेद कीजिए :

प्रान्त + अस्य   महा + अस्त्रे   च + असहत

6. विशेषण और विशेष्यों का मेल मिलाइए :

विशेषण	**विशेष्य**	**विशेषण**	**विशेष्य**
महान्	व्यक्तिः	कुशलः	लेखकः
स्वतन्त्र	भारते	तस्य	जननी
प्राथमिक	पाठशालायां	वाक्पटु	राजनीतिज्ञः
प्रथमः	राष्ट्रपतिः	अयं	देशभक्तः
त्राणि	वर्षाणि	प्रथमः	राज्यपालः

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. सत्यं अहिंसा च तस्य द्वे महास्त्रे आस्ताम्।

ख. डा0 राजेन्द्र प्रसादः भारतस्य प्रथमः राष्ट्रपतिः आसन्।
ग. राजभवने राज्यपालः निवसति।
घ. बाल्यकाले अस्य नाम मूलशंकर आसीत्।
ङ. तिलकः एकः महान् देशभक्तः आसीत्।
च. सरोजिनी नायडूः प्रंशसनीयं कार्यं अकरोत्।

चतुर्थः पाठः — शशकस्य चातुर्यम्

अर्थ- एक वन में एक शेर रहता था। वह बहुत निर्दयी और दुष्ट था। वह प्रतिदिन बहुत से पशुओं का वध करता था। सभी पशु चिन्तित थे। एक बार सभी पशु साहस करके शेर के पास गए और बोले हे वनराज! तुम हमारे राजा हो और हम तुम्हारी प्रजा। तुम हमारा सबका वध मत करो। हमारे में से एक-एक पशु प्रतिदिन तुम्हारे खाने के लिए आएगा। इस प्रकार तुम्हारी भूख भी शान्त हो जाएगी। शेर ने अच्छा कहकर पशुओं के प्रस्ताव को स्वीकार किया।

इसके पश्चात प्रतिदिन एक पशु अपने आप ही उसके पास जाने लगा। शेर उसको खाने लगा। एक बार एक बुद्धिमान खरगोश की बारी आ गई। उसने रास्ते में जाते हुए अपने जीवन की रक्षा के लिए एक उपाय सोचा। वह बहुत देर से शेर के पास गया। शेर को बहुत भूख लगी थी। खरगोश के विलम्ब से क्रोधित होकर उसने दहाड़ते हुए देरी का कारण पूछा।

खरगोश ने विनम्रतापूर्वक कहा– ''हे महाराज! वन में एक दूसरा शेर है। वह कहता है कि मैं ही वनराज हूँ। तुम मेरा भोजन हो।''

यह सुनकर क्रोधित शेर बोला– ''वह दूसरा शेर कहाँ है?'' खरगोश बोला– ''हे महाराज! पास में ही एक कुआँ है। वह अन्य शेर उसी में ही रहता है'' यह सुनकर वह शेर अत्यधिक क्रोध से बोला– ''कहाँ है वह दूसरा सिंह? मैं वहाँ जाकर देखता हूँ।''

वह चतुर खरगोश शेर को कुएँ के पास लाया और बोला– ''हे महाराज! वह दूसरा शेर इस कुएँ में रहता है।'' जब शेर ने कुएँ में देखा, तब उसने जल में अपनी परछाई देखी। जल में अपनी परछाई को देखकर क्रोध से उस दूसरे शेर को मारने के लिए वह कुएँ में कूद गया और मर गया। इस प्रकार खरगोश ने अपनी बुद्धि कौशल से अपनी रक्षा की। उस दिन से सभी जन्तु निर्भय हो गए।

कहा भी है– जिसकी बुद्धि उसका बल निर्बुद्धि का बल कहाँ।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. सिंहः एकस्मिन् वने अवसत्।
ख. सिंहः प्रतिदिनं बहूनाम् पशूनाम् मारयति स्म।
ग. सिंहः 'एवमऽस्तु' कथयित्वा पशूनां प्रस्तावं स्वीकृतवान्।
घ. सिंहः क्रुद्धेन शशकं अपृच्छत् 'कुत्रास्ति सः अन्यः सिंहः?'
ङ. शशकः सिंहम् कूपं समीपम् अनयत्।
च. सिंहः कूपे स्वप्रतिबिम्बम् अपश्यत्।
छ. शशकः स्वबुद्धिचातुर्येण आत्मरक्षाम् अकरोत्।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए:

क. अति क्रूर दुष्टः — ख. वधं मा — ग. स्वयमेव; समीपम्
घ. चिरविलम्बेन — ङ. कूपे; स्वप्रतिबिम्बं — च. बुद्धिचातुर्येण

3. सही वाक्यों के सामने 3 चिह्न लगाइए:

क. 7 ख. 3 ग. 3 घ. 7 ङ 3

4. किसने किससे कहा?

क. पशुओं ने शेर से कहा। ख. खरगोश ने शेर से कहा।
ग. शेर ने खरगोश से कहा। घ. किसी चतुर व्यक्ति ने।

5. क. संधि-विच्छेद कीजिए-

एक + एकः	तव + आहाराय	एवम् + अस्तु	सम + आगच्छत्
कुत्र + अस्ति	तम् + अपरम्	उक्तम् + अपि	बुद्धिः + यस्य

ख. पाठ में से पाँच सर्वनाम और पाँच विशेषण छाँटकर लिखिए:

सर्वनाम : सः, त्वम्, अस्माकम्, सर्वे, तम्

विशेषण : अतिक्रूरः, दुष्टः, शान्ता, विलम्बेन, कुपितः

ग. इन शब्दों का हिंदी में अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

एकैकः	एक-एक	अस्मासु एकैकः पशुः तव समीपम् आगमिष्यति।
एवमऽस्तु	ठीक है या ऐसा ही हो	सिंह एवमऽस्तु प्रस्तावं स्वीकृतवान्।
स्वयमेव	अपने आप ही	एकः पशुः स्वयमेव तस्य समीपं अगच्छत्।
रक्षणाय	रक्षा के लिए	शशकः स्वरक्षाणाय उपायम् अचिन्तयत्।
विलम्बेन	देरी से	शशकः विलम्बेन अगच्छत्।
श्रुत्वा	सुनकर	एतत् श्रुत्वा सिंहः क्रोधित् अभवत्।
अस्मिन्	इसमें	अस्मिन वने एकः सिंहः अवसत्।

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. वने एकः दुष्टः सिंहः निवसति स्म।
ख. एकस्मिन् दिने चतुर शशकस्य अवसरः समागतः।
ग. ते श्वः ग्रामं गमिष्यन्ति।
घ. वयं भवत आहारं न भविष्यामः।
ङ. सिंहः कूपे अकूर्दत् मृतः च।
च. शशकः विलम्बेन आगमिष्यति।

पञ्चमः पाठः — स्वामी विवेकानन्दः

अर्थ- भारत देश में समय-समय पर अनेक महापुरुष हुए। उनमें विवेकानन्द सूर्य के समान तेजस्वी महापुरुष थे। बचपन में उनका नाम नरेन्द्र था। उनके पिता का नाम विश्वनाथदत्त था। रामकृष्ण परमहंस उनके गुरु थे। वह काली के पुजारी तथा सिद्धपुरुष थे। गुरु ने उनका नाम विवेकानन्द रखा।

विवेकानन्द का व्यक्तित्व आकर्षक और सरल था। अधिक लोगों का हित लोगों का सुख उनके जीवन का उद्देश्य था। उनका स्वभाव दार्शनिक था। ईश्वर है या नहीं इस प्रश्न से वह सदैव परेशान हुए। वह भारत की जनता का अज्ञान और दुर्दशा को देख दुःखी हुए।

एक बार कक्षा में शिक्षक ने नरेन्द्र से प्रश्न पूछा। उनका उत्तर तो ठीक था परन्तु अध्यापक ने उस उत्तर को अशुद्ध माना। सत्य के लिए उन्होंने कभी भी समर्पण नहीं किया। अतः उन्होंने अध्यापक से विवाद किया। अध्यापक क्रोधित हुए और उनको पीटा।

नरेन्द्र ने घर आकर सारा वृतान्त अपनी माता से कहा। माता ने उन्हें सान्त्वना दी और कहा कि यदि तुम सत्यनिष्ठ हो तो चिन्ता मत करो। सभी परिस्थितियों में सत्य का अनुसरण करना चाहिए। सत्य के समान तप नहीं है।

गुरु की आज्ञा से वह सब जगह घूमे तथा भारतीय संस्कृति का प्रचार किया। सन् 1893 ई० में अमेरिका देश के शिकागो नगर में 'विश्व धर्म सम्मेलन' हुआ। वहाँ उनका भाषण अद्वितीय था। सभी लोग मन्त्र-मुग्ध हो गए। अनेक लोग उनके भक्त हो गए। उनके उपदेशों का सार तो सब हित के लिए ही-निडर होवें। श्रद्धावान् होवें। कर्मयोगी होवें। तेजस्वी होवें। निर्धनों के सेवी होवें और राष्ट्रप्रेमी होवें।
उठो जागो श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करो। यह विवेकानन्द का मूल मन्त्र था। स्वामी विवेकानन्द राष्ट्र के लिए, समाज के लिए और संस्कृति की रक्षा के लिए समर्पित थे। उनका स्मारक राजस्थान के खेतड़ी नगर में स्थित है। दक्षिण भारत में कन्याकुमारी में सागर के बीच में उस महानुभाव का मन्दिर शोभायमान है।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. बाल्यकाले तस्य नाम नरेन्द्रः अस्ति।
ख. विवेकानन्दस्य गुरुः रामकृष्णस्य परमहंसः आसीत्।
ग. तस्य जीवनस्य उद्देश्यः ''बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'' आसीत्।
घ. विवेकानन्दः ईश्वर अस्ति वा न अनेन प्रश्नेन सर्वदा आकुलः अभवत्।
ङ. विवेकानन्दस्य शिक्षकेन सह विवादन् अभवत् शिक्षकः तं च अताडयत्।
च. सः सर्वत्र भ्रमणं कृत्वा भारतीयाः संस्कृतेः प्रचारम् अकरोत्।
छ. विश्वधर्म सम्मेलनं अमेरिकादेशस्य शिकागोनगरे अभवत्।
ज. विवेकानन्दस्य स्मारकं खेतड़ी नगरे कन्याकुमार्यां मन्दिरं च स्थितास्ति।

2. दिए शब्दों की उचित विभक्ति खाली स्थान में भरिए :

क. गुरुणा ख. प्रश्नम् ग. सत्यस्य घ. मंत्रमुग्धाः ङ. राष्ट्राय समाजाय

3. सही मेल मिलाइए:

क. रामकृष्णः परमहंसः	कालीपूजकः सिद्धपुरुषः च आसीत्।
ख. विवेकानन्दस्य प्रवृतिः	दार्शनिकः आसीत्।
ग. शिक्षकः तम् उत्तरं	अशुद्धम् अमन्यत।
घ. माता तस्मै सान्त्वनाम् अयच्छत्	अकथयत् च यदि त्वं सत्यनिष्ठः तर्हि मा चिन्तयः।
ङ. उत्तिष्ठत् जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्	इति विवेकानन्दस्य मूलमन्त्रं आसीत्।

4. इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

बचपन में	उसका	बेचैन (व्याकुल)
उठो	देश के लिए	पूछा
हित के लिए	दिया	सदैव

5. इन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

भानुना सदृशः	विवेकानन्दः भानुना सदृशः तेजस्वी बालकः आसीत्।
आकर्षकं	विवेकानन्दस्य व्यक्तित्वम् आकर्षकम् आसीत्।
अद्वितीयम्	विवेकानन्दस्य भाषणं अद्वितीयम् आसीत्।
संस्कृतिरक्षायै	विवेकानन्दः संस्कृतिरक्षायै समर्पितम् आसीत्।

6. संधि-विच्छेद कीजिए:

स्व + अम्बायै	सत्य + स + मम्	वरात् + निबोधत्
स्थित + अस्ति	जीवन + अस्य	महानुभाव् + अस्य

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. नरेन्द्र बाल्यकाले कुशाग्रबुद्धिः आसीत्।

ख. तस्य गुरुः कालीपूजकः आसीत्।

ग. अस्माकं तेन सह विवादम् अभवत्।

घ. यूयम् किमर्थम् आकुलं अभवत्।

8. अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए :

क. 'पृच्छ' तथा 'कृ' धातु के लृट्लकार तथा विधिलिङ्गलकार में रूप लिखिए।

'पृच्छ्' धातु लृट्लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्षयन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथः	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्यावः	प्रक्ष्यामः

विधिलिङ्ग

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
मध्यम पुरुष	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

'कृ' धातु लृट्लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

विधिलिङ्ग

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम	कुर्याव	कुर्याम

ख. 'तस्य, गुरुणा, प्रश्नेन, तस्मै, सत्यस्य, भाषणम्, रक्षायै शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिए :

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
तस्य	षष्ठी	एकवचन
गुरुणा	तृतीया	एकवचन
प्रश्नेन	तृतीया	एकवचन
तस्मै	चतुर्थी	एकवचन
सत्यस्य	षष्ठी	एकवचन
भाषणम्	द्वितीया	एकवचन
रक्षायै	चतुर्थी	एकवचन

अर्थ-

1. जैसे जीवात्मा की इस शरीर में बालपन, जवानी और वृद्धावस्था होती है, उसी प्रकार अन्य शरीर की प्राप्ति होती है। उस विषय में धीर पुरुष मोहित नहीं होते।
2. हे अर्जुन! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म (पाप) की वृद्धि होती है, तब-तब ही मैं स्वयं को साकार रूप में प्रकट करता हूँ।
3. सज्जन लोगों के उद्धार के लिए तथा दुष्ट लोगों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह स्थापना करने के लिए मैं स्वयं को प्रत्येक युग में उत्पन्न करता हूँ।
4. कर्म करने में ही तेरा अधिकार है उसके फलों में कभी नहीं। इसलिए तुम कर्मों के फल का हेतु मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी आसक्ति न हो।
5. जैसे मनुष्य पुराने कपड़ों को छोड़कर दूसरे नए कपड़े ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर दूसरे नए शरीर को प्राप्त करती है।
6. इस जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल गीला नहीं कर सकता और वायु सुखा नहीं सकती।
7. यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्म लेती है और न मरती ही है तथा उत्पन्न होकर पुनः होने वाली है। यह आत्मा अजन्मा नित्य सनातन और पुरातन है। शरीर के मर जाने पर भी यह नहीं मरती।

अभ्यासः *Exercise*

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. धीरः तत्र न मुहयति।

ख. यदा धर्मस्य ग्लानिः भवति। तदा ईश्वरः आत्मानं सृजति।

ग. धर्मसंस्थापनार्थाय ईशः युगे युगे संभवति।

घ. शस्त्राणि आत्मां न छिन्दन्ति।

ङ. एनं मारुतः न शोषयन्ति।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए :

क. धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं

ख. कर्मण्येवाधिकारस्तेमा फलेषु
सङ्गोऽस्त्व कर्मणि।।

ग. शस्त्राणि; दहति।
क्लेदयन्त्यापो; शोषयति।

3. सही मेल मिलाइएः

क. परित्राणाय साधूनां	विनाशाय च दुष्टकृताम्।
ख. देहिनोऽस्मिन् यथा देहे	कौमारं यौवनं जरा।
ग. तथा शरीराणि विहाय जीर्णा	न्यन्यानि संयाति नवानि देही।
घ. न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं	भूत्वा भविता वा न भूयः।

4. संधि-विच्छेद कीजिए :

धीरः + तत्र	अभि + उत्थानम्
तद + आत्मानम्	सृजामि + अहम्

धर्मसंस्थापना + अर्थाय	सङ्गः + अस्तु + अकर्मणि
क्लेदयन्ति + आपो	कदाचित् + न + अयम्

5. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

वस्त्रम्	कर्पटः	अग्निः	ज्वाला
वायुः	पवनः	कुसुमम्	प्रसूनम्

6. विपरीतार्थक शब्दों का मेल मिलाइए :

क	ख
नवानि	जीर्णानि
विहाय	गृहीत्वा
लाभः	अलाभः
जयः	पराजयः
सुखम्	दुःखम्

सप्तमः पाठः — असत्यस्य परिणामः

अर्थ- एक गाँव में एक गड़रिया रहता था। उसका हरिसिंह नाम का एक पुत्र था। वह निरर्थक झूठ बोलता रहता था। उसके व्यवहार से सभी लोग दुःखी थे। हरिसिंह वन में बकरियाँ चराता था। वन में बहुत से पशु, पक्षी, व्याघ्र, शेर और हिंसक जानवर रहते थे। एक बार उसने हँसी-मजाक के लिए जोर से कहा–"हे गाँव वालो! बचाओ-बचाओ मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो। शेर मेरे पास में आ गया है।"

उसके शब्द को सुनकर बहुत से किसान हरिसिंह की सहायता के लिए हाथ में डंडा लेकर खेत से वहाँ जल्दी-जल्दी आ गए। उन्होंने पूछा– शेर कहाँ है? हरिसिंह जोर से हँसा और बोला मैंने तो मनोरंजन के लिए इस प्रकार कहा था। कहीं भी शेर नहीं है। अपमानित किसान खेत में चले गए। झूठ बोलने वाले हरिसिंह का विश्वास सभी लोगों ने नहीं किया।

एक बार तो सत्य रूप में वहाँ शेर आ गया जहाँ हरिसिंह बकरियाँ चरा रहा था। उसने फिर बार-बार जोर, जोर से पुकारा– हे ग्रामीणों! मेरी रक्षा करो, मेरी रक्षा करो।" परन्तु गाँव वालों ने उसका विश्वास नहीं किया। शेर ने हरिसिंह को मार दिया और खा गया। इस प्रकार उस गड़रिये के पुत्र ने झूठ बोलने का फल प्राप्त किया।

क्योंकि झूठ बोलने वाले का कोई भी विश्वास नहीं करता है। इसलिए कभी भी झूठ मत बोलो।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. हरिसिंहः वने अजाः चारयति स्म।

ख. वने बहवः पशवः पक्षिणः व्याघ्राः सिंहः च वसन्ति स्म।

ग. "भो-भो ग्रामीणाः! परित्राय-परित्राय रक्षन्तु माम्" इति हरिसिंहः उच्चैः स्वरैः अवदत्।

घ. हरिसिंहस्य सहायतार्थं बहवः कृषकाः आगच्छन्।

ङ. एकदा तु सत्यमेव तत्र सिंहः आगच्छत्।

च. सिंहः हरिसिंहम् अभक्षयत्।

2. खाली स्थान में दिए गए शब्दों की उचित विभक्ति भरिए:

क. स्म ख. वने ग. कौतुकाय घ. समीपे ङ. अजापालकस्य

3. सही वाक्यों के सामने 3 चिह्न लगाइए:

क. 7 ख. 3 ग. 7 घ. 3 च. 7

4. क. इन वाक्यों को सही क्रम में लिखिए:

क. एकस्मिन् ग्रामे एकः अजापालकः अवसत्।

ख. एकदा सः कौतुकाय उच्चैः अवदत्।

ग. सिंहः मम समीपे समायातः अस्ति।

घ. कृषकाः तस्य सहायतार्थं हस्ते दण्डं नीत्वा क्षेत्रात् तत्र शीघ्रम् आगच्छन्।

ङ. सिंह हरिसिंहम् अमारयत् अभक्षयत् च।

ख. इन शब्दों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

क. झूठ	**असत्यं** मा वद।
ख. आश्चर्य से	सः **कौतुकाय** उच्चैः अवदत्।
ग. रक्षा के लिए	परित्राय-**परित्राय** माम्।
घ. अपमानित	ते सर्वे **तिरस्कृताः** अभवन्।
ङ. समीप में	सः अत्र **समीपे** अस्ति।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए:

क. अजापालकस्य एकः बालकः आसीत्।

ख. वने बहवः हिंसकाः पशवः निवसन्ति स्म।

ग. किञ्चित जनाः तस्य सहायतार्थं अधावन्।

घ. मिथ्यावादिनं पापं अस्ति।

ङ. वने सः सिंहम् अपश्यत्।

6. क. 'कृ' धातु के लङ्लकार में रूप :

'कृ' धातु लङ्लकार के रूप

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

ख. स्वयं कीजिए।

याद कीजिए

पाठ में आए क्रियाविशेषण छाँटकर लिखिए :

उच्चैः अवदत्, उच्चैः अहसत्, मिथ्यावादिनः, उच्चैः स्वरैः, शब्दं अकरोत्।

अष्टमः पाठः — एकलव्यस्य गुरुभक्तिः

अर्थ- पहले हिरण्यधनु नाम का एक भील राजा हुआ । उसका एकलव्य नाम का पुत्र था। एक बार अपने पिता की आज्ञा से धनुष विद्या सीखने के लिए पाण्डवों के गुरु द्रोणाचार्य के पास गया। द्रोणाचार्य ने उसको शूद्र बालक कहकर धनुष विद्या नहीं सिखाई।

एकलव्य निराश नहीं हुआ। उसकी गुरुभक्ति भी शिथिल नहीं हुई। उसने वन में द्रोणाचार्य की एक मिट्टी की मूर्ति बनाकर, वृक्ष के नीचे स्थापित करके धनुष विद्या का अभ्यास करने लगा। बार-बार अभ्यास करने से वह अच्छा धर्नुधारी हो गया।

एक बार द्रोणाचार्य अपने शिष्यों के साथ धनुष विद्या का अभ्यास करने के लिए गहन वन में गए। वहीं पर एकलव्य भी अभ्यास करता था। उसी समय एक कुत्ता काले रंग के एकलव्य को देखकर, भौंकना प्रारम्भ कर दिया। अभ्यास में विघ्न का अनुभव कर एकलव्य ने बाणों से उस कुत्ते का मुख बन्द कर दिया। कुत्ते

का बन्द मुख देखकर द्रोणाचार्य सहित उसके सभी शिष्य आश्चर्यचकित हो गए। राजकुमारों के साथ द्रोणाचार्य एकलव्य की कुटिया के पास आ रहे थे। द्रोणाचार्य को देख एकलव्य उनके चरणों में गिर पड़ा।

द्रोण- (हाथ उठाकर) बेटा तुम्हारा कल्याण हो।

एकलव्य- (विनम्रतापूर्वक आसन बिछाते हुए) हे गुरुदेव! आज मुझ पर कैसे कृपा की।

द्रोण- तुमने धनुष विद्या किससे (सीखी) शिक्षा प्राप्त की।

एकलव्य- मैं तो आपका ही शिष्य हूँ। ऐसा कहकर उसने द्रोणाचार्य की मिट्‌टी की मूर्ति की ओर संकेत किया।

द्रोण- (आश्चर्य से) मैं?

एकलव्य- हाँ गुरुदेव! आप ही मेरे गुरु हैं। आपके चरणों का आश्रय लेने के लिए गया था, परन्तु आपने मुझे निराश कर दिया। तत्पश्चात् देवर्षि नारद ने मुझको कहा– ''अभ्यास से ही विद्या आती है। अभ्यास करो वह ही गुरु है।'' तब से आपकी मूर्ति के सामने अभ्यास कर रहा हूँ। यह धनुर्विद्या आपकी कृपा का ही फल है।

द्रोण- तब तुम मुझे गुरुदक्षिणा दीजिए।

एकलव्य- (नतमस्तक होकर) हे गुरुदेव! आज्ञा दीजिए।

द्रोण– तो दाएँ हाथ का अंगूठा दीजिए (मन में सोचकर) शूद्र जाति उत्पन्न हुए भी यह बालक कैसे सद्‌गुणों से सम्पन्न है।

एकलव्य- (हर्ष सहित) हे गुरुदेव लीजिए।

शीघ्र अंगूठा काटकर देता है। गुरु द्रोण और राजकुमार आश्चर्यचकित हो जाते हैं। सभी राजकुमार एकलव्य की गुरुभक्ति की प्रशंसा करते हैं। द्रोण गम्भीर मुद्रा में शिष्यों के साथ प्रस्थान करते हैं। एकलव्य की गुरुभक्ति धन्य है। सभी शास्त्रों में गुरुभक्ति उत्कृष्ट मानी जाती है और गुरु का महत्त्व बताया है।

गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु विष्णु है, गुरु ही आदिदेव महेश्वर हैं।
गुरु ही सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म हैं। उस गुरु को मैं नमस्कार करता हूँ।

अभ्यासः *Exercise*

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. एकलव्यः एकः भिल्लः आसीत्।
ख. सः धनुर्विद्या शिक्षितुं द्रोणाचार्यं प्रति अगच्छत्।
ग. द्रोणाचार्यः एकलव्यं शूद्र बालकम् कथयित्वा न अशिक्षयत्।
घ. एकलव्यः द्रोणाचार्यस्य मृण्मूर्तिं निर्माय धनुर्विद्यायाः अभ्यासं करोति।
ङ. एकलव्यः बाणैः सारमेयस्य मुखम् असीव्यत्।
च. सर्वेषु शास्त्रेषु गुरुभक्तिः उत्कृष्टा मता।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिएः

क. एकलव्यः
ख. धनुर्धरः
ग. सारमेयः; बुक्कितुमारभत्
घ. द्रोणाचार्य; उटजसमीपं
ङ. अंगुष्ठम्
च. शास्त्रेषु; उत्कृष्टा

3. इन वाक्यों का सही मेल मिलाइएः

क. शिक्षतुं पाण्डवानां द्रोणाचार्यं प्रति अगच्छत्।
ख. गुरुभक्तिरपि शिथिला न जाता।
ग. अभ्यासाय गहनं वनं अगच्छत्।
घ. तस्य चरणयोः अपतत्।

ङ. आश्रयं प्राप्तुम् अगच्छम्।

च. बालकः कीदृशेन सद्गुणेन युक्तः अस्ति।

4. संधि-विच्छेद कीजिए :

न + अशिक्षयत्	गुरुभक्तिः + अपि
स्थाप् +क्त्वा	तत्र + एव
तदा + एव	बुक्कितुम् + आरभत्
विघ्नम् + अनुभूय	हस्तम् + उत्थाय

5. इन शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिए:

शब्द	विभक्ति	वचन	शब्द	विभक्ति	वचन
भिल्लः	प्रथमा	एकवचन	**पाण्डवानां**	षष्ठी	बहुवचन
निर्माय	चतुर्थी	एकवचन	**द्रोणाचार्यस्य**	षष्ठी	एकवचन
शिष्यैः	तृतीया	बहुवचन	**राजकुमारैः**	तृतीया	बहुवचन
गुरुदेव!	सम्बोधन	एकवचन	**चरणयोः**	षष्ठी/सप्तमी	द्विवचन
मूर्त्याः	षष्ठी	एकवचन	**सद्गुणेन**	तृतीया	एकवचन
शास्त्रेषु	सप्तमी	एकवचन	**गुरवे**	चतुर्थी	एकवचन

6. इन शब्दों की संस्कृत लिखिए :

निराशः	अभ्यासः	धर्नुधरः	सारमेय
अनुगृहीतवान्	गृहणातु	भवतामेव	अंगुष्ठ

7. इन शब्दों से भूतकाल में वाक्य बनाइए :

एकलव्यः	एकलव्यः एकः बालकः आसीत्।
मृण्मूर्तिं	सः मृण्मूर्तिं अनिर्माणात्।
धनुर्विद्या	सः धनुर्विद्यां गृहणति स्म।
सारमेयः	सः सारमेय आसीत्।

8. अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए:

ख. 'गुरु', 'वृक्ष' और 'शिष्य' शब्द के रूप।

'गुरु' शब्द के रूप

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	गुरुः	गुरु	गुरवः
द्वितीया विभक्ति	गुरुम्	गुरु	गुरुन्
तृतीया विभक्ति	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी विभक्ति	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पंचमी विभक्ति	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी विभक्ति	गुरोः	गुर्वोः	गुरुणाम्
सप्तमी विभक्ति	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरु!	हे गुरवः!

'वृक्ष' शब्द के रूप

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	वृक्षः	वृक्षौ	वृक्षाः
द्वितीया विभक्ति	वृक्षम्	वृक्षौ	वृक्षान्

तृतीया विभक्ति	वृक्षेण	वृक्षाभ्याम्	वृक्षैः
चतुर्थी विभक्ति	वृक्षाय	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
पंचमी विभक्ति	वृक्षात्	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
षष्ठी विभक्ति	वृक्षस्य	वृक्षयोः	वृक्षाणाम्
सप्तमी विभक्ति	वृक्षे	वृक्षयोः	वृक्षेषु

'शिष्य' शब्द के रूप

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	शिष्यः	शिष्यौ	शिष्याः
द्वितीया विभक्ति	शिष्यम्	शिष्यौ	शिष्यान्
तृतीया विभक्ति	शिष्येण	शिष्याभ्याम्	शिष्यैः
चतुर्थी विभक्ति	शिष्याय	शिष्याभ्याम्	शिष्येभ्यः
पंचमी विभक्ति	शिष्यात्	शिष्याभ्याम्	शिष्येभ्यः
षष्ठी विभक्ति	शिष्यस्य	शिष्ययोः	शिष्याणाम
सप्तमी विभक्ति	शिष्ये	शिष्ययोः	शिष्येषु
सम्बोधन	हे शिष्य!	हे शिष्यौः!	हे शिष्याः!

९. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. हिरण्यधनुः भिल्लानाम् राजा आसीत्।

ख. द्रोणाचार्यः एकलव्यं शिष्यं ना स्वीकरोत्।

ग. कुकराः विचित्रे बुक्कयति।

घ. एकलव्यः मृण्मूर्तिं अनिर्माणात्।

ङ. द्रोणाचार्यं दृष्ट्वा स : चरणयोः अपतत्।

नवमः पाठः — रक्षाबन्धनम्

अर्थ- भारतवर्ष में अनादिकाल से अनेक उत्सवों का प्रतिवर्ष आयोजन किया जाता है। इन उत्सवों में रक्षाबन्धन हमारा सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक है। यह त्यौहार वर्षा ऋतु में सावन मास की पूर्णिमा को होता है। इसलिए इसका नाम 'श्रावणी' प्रसिद्ध है।

रक्षाबन्धन के अवसर पर बहिनें भाइयों के हाथों पर राखियाँ बाँधती हैं। राखियाँ अनेक रंगों वाली होती हैं। राखी बहिन के प्रेम का प्रतीक होता है। इस अवसर पर बहिनें भाइयों की दीर्घायु एवं सुखमय जीवन की कामना करती हैं। भाई बहिनों को सुन्दर वस्तुएँ देते हैं।

हमारे समाज में रक्षाबन्धन का महत्त्व विद्यमान है। रक्षाबन्धन देश की एकता और अखण्डता का द्योतक है। भारत के इतिहास में रक्षाबन्धन के महत्त्व के सम्बन्ध में एक दृष्टान्त मिलता है। महारानी कर्मवती ने हुमायूँ नामक शासक को राखी भेजी थी। हुमायूँ ने राखी को स्वीकार कर रानी कर्मवती की रक्षा की।

हिन्दुओं के चार उत्सव विशेष हैं। उनमें रक्षाबन्धन, विजयदशमी, दीपावली और होली। रक्षाबन्धन आपसी स्नेह का द्योतक, विजयदशमी अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक है, दीपावली आनन्द का प्रतीक है और होली सभी वर्णों के सामंजस्य का प्रतीक है।

भारत सरकार ने इस दिन को 'संस्कृति' दिवस के रूप में घोषित किया। इस दिवस पर देश की रक्षा का संकल्प करना चाहिए।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. रक्षाबन्धनस्य पर्व श्रावणमासस्य पूर्णिमायाम् तिथौ भवति।

ख. अस्मिन् अवसरे भगिन्यः भ्रातृणां दीर्घायुष्यं कामयन्ति।

ग. भ्रातरः भगिनीभ्यः सुन्दराणि वस्तूनि समर्पयन्ति।

घ. हुमायूँ कर्मवत्याः रक्षामकरोत्।

ङ. रक्षाबन्धनं स्नेहस्य द्योतकः अस्ति।

च. दीपावलिः आनन्दस्य, होलिका सर्ववर्णसाम्यस्य च प्रतीकमस्ति।

छ. अस्मिन् दिवसे देशस्य रक्षायाः संकल्पः कर्त्तव्यः।

2. खाली स्थान भरिए:

क. स्नेहस्य ख. भ्रातृणां हस्तेषु रक्षासूत्राणि ग. एकतायाः अखण्डतायाश्च

घ. उत्सवाः ङ. भारतशासनेन 'संस्कृतदिवस'

3. सही वाक्य के सामने 3 चिह्न लगाइए:

क. 7 ख. 3 ग. 3 घ. 3 ङ. 7

4. इन शब्दों के अर्थ लिखिए :

महान उत्सव	द्योतक (प्रतीक)	राखियाँ
लम्बी आयु	एकता का	प्रतीक
रक्षा में	हाथों में	प्यार का (प्रेम का)

5. संधि कीजिए:

महोत्सवः	प्रतीकमस्ति	एतस्मिन्नवसरे	दीर्घायुष्यं
अखण्डतायाश्च	रक्षामकरोत्	चेति	प्रतीकमिति

6. निम्नलिखित के धातुरूप लिखिए:

वृत् (लट् लकार, प्रथम पुरुष)	वर्तयति	वर्तयतः	वर्तयन्ति
ज्ञा (लट् लकार, मध्यम पुरुष)	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
अस् (लोट लकार, उत्तम पुरुष)	असानि	असाव	असाम

7. इन शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

महोत्सवाः	भारते बहवः महोत्सवाः सन्ति।
रक्षासूत्रं	इदं रक्षासूत्रं अस्ति।
सुखमयं	भगिन्यः सुखमयं जीवनं कामयन्ति।
एकतायाः	रक्षाबन्धनं एकतायाः प्रतीकं अस्ति।
सङ्कल्पः	वयं देशस्य संकल्पं कर्मुः।

8. संस्कृत में अनुवाद कीजिए:

क. रक्षाबन्धनं भारतस्य प्रमुख उत्सवः अस्ति।

ख. अस्मिन् दिने भगिन्यः भ्रातृणां हस्ते रक्षा सूत्राणि।

ग. भ्रातरः भगनीं रक्षायाः संकल्पं कुर्वन्ति।

घ. वयं देशस्य रक्षायाः संकल्पं कर्तव्यः।

ङ. हुमायूँ कर्मवत्याः प्रेषितवान् रक्षासूत्रं स्वीकारं अकरोत्।

अर्थ- हमारे चारों ओर विद्यमान जो भूमि, जो जल और जो वायु है वह सब मिलकर पर्यावरण कहलाता है। स्वस्थ पर्यावरण हमारे जीवन का आधार है। साफ पर्यावरण स्वस्थ जीवन का आधार है। जब पर्यावरण और मानव समाज में सन्तुलन होता है, तब मानव समाज का विकास होता है। वन, वृक्ष, नदियाँ, जलाशय, पशु, पक्षी, सागर और जल-जन्तु पर्यावरण में सन्तुलन स्थापित करते हैं, जिससे हमारे जीवन की रक्षा होती है।

इस समय केवल भारत में ही नहीं अपितु सारे भूमण्डल पर प्राकृतिक असन्तुलन उत्पन्न हो गया है। प्रमुख रूप से पृथ्वी पर भूमि, जल, वायु, ध्वनि प्रदूषण फैल गया है। हवा कीटाणुओं को इधर-उधर ले जाती है। पर्यावरण के असन्तुलन से अनेक असाध्य रोग उत्पन्न हो गए। पेट्रोल से चलने वाले यानों से प्रतिक्षण विषयुक्त धुआँ वायु में मिलता है, जिससे वायु प्रदूषण बढ़ता है। उद्योगशालाओं (कारखानों) के गन्दे जल से नदियाँ प्रदूषित हो गईं, आणविक प्रयोग से जलाशयों और सागरों का जल प्रदूषित हो गया।

मानव अपने स्वार्थ के लिए वनों को काटता है जिससे प्रकृति का रमणीय रूप विकृत होता है। वनों के नाश से शेर, व्याघ्र, भालू, हिरन आदि वन्य पशु कम हो गए। वृक्षों के अभाव (कटने से) से वहाँ पक्षी भी नहीं कूजते (चहचहाते) हैं। हमारे पूर्वज पर्यावरण की रक्षा के लिए वृक्ष लगाते और वायु को शुद्ध करने के लिए हवन करते थे।

पर्यावरण रक्षा के लिए लोगों को यहाँ-वहाँ थूकना और मलमूत्र नहीं त्यागना चाहिए। लड़कों, युवकों, किसानों और युवतियों को विद्यालय में, बगीचे में, खेतों में अधिक से अधिक वृक्षारोपण करना चाहिए। यद्यपि वैज्ञानिक प्रदूषण को दूर करने के प्रयत्न कर रहे हैं, फिर भी हम सभी का कर्तव्य है– पर्यावरण का संरक्षण करना।

महाभारत में लिखा है–

वृक्षों को काटना पाप, वृक्षों को लगाना हितकारी है।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. भूमिः जलम् वायुश्च तत्सर्वमिलित्वा पर्यावरणं कथ्यते।

ख. अस्माकं जीवनस्य मूलाधारः पर्यावरणमस्ति।

ग. वनानिवृक्षाः नद्याः जलाशयाः पशवः पक्षिणः सागराः च पर्यावरणे सन्तुलनं स्थापयन्ति।

घ. आणविकप्रयोगैः जलाशयानां सागराणां च जलं दूषितम् भवति।

ङ. मानवः स्वार्थाय वनानि छिनत्ति।

च. पर्यावरणस्य रक्षायै अस्माकम् पूर्वजाः पादपान् आरोपयन्ति।

छ. पर्यावरण रक्षणाय जनाः ष्ठीवन मलमूलं प्रक्षेपणं न कुर्यः।

2. खाली स्थान भरिए:

क. जीवनस्य ख. प्राकृतिक-सन्तुलनं ग. असन्तुलनेन; रोगाः घ. अभावेन तत्र; कूजन्ति। ङ. वृक्षाणां कर्तनं; वृक्षाणांरोपणं; जायते वृक्षैः; विज्ञानवादिभिः

3. सही वाक्य के सामने 3 चिह्न लगाइए:

क. 3 ख. 7 ग. 7 घ. 7 ङ. 3

4. इन शब्दों के अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

पर्यावरणं	वातावरण	पर्यावरणं किं कथ्यते?
सन्तुलनं	सन्तुलन	वृक्षाः पर्यावरणे सन्तुलनं स्थापयन्ति।
भूमण्डले	पृथ्वी पर	भूमण्डले अनेकाः सागराः सन्ति।

इतस्ततः	इधर-उधर	इतस्ततः अनेकानि वनानि सन्ति।
विषमिश्रितं	जहरयुक्त	विषमिश्रित धूमं हानिकारकः भवति।

5. **क. पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

मनुष्यानाम्	धराः	पवनः
नभः	नीरः	तडागः

ख. वचन बदलकर लिखिए :

वने	प्राणेः	सर्वेषु
नद्याः	कृषकः	क्षेत्राणि
पादपः	नगरे	मार्गः

ग. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :

मरणस्य	असन्तुलनम्	पुरातनाः
अन्तः	युष्माकम्	अमृतः

6. **दिए गए शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिए :**

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
जीवनस्य	षष्ठी	एकवचन
भारते	सप्तमी	एकवचन
कीटाणवः	प्रथमा	बहुवचन
जलाशयानां	षष्ठी	बहुवचन
शुद्ध्यर्थं	द्वितीया	एकवचन
युवत्यः	प्रथमा	बहुवचन

7. **संस्कृत में अनुवाद कीजिएः**

क. अस्मान् परितः वायुः अस्ति।
ख. वयं नासिकया श्वासं गृहणीमः।
ग. प्रत्येक वर्षं वनमहोत्सवः भवति।
घ. पर्यावरणं प्रदूषणात् रक्षां कुरु।
ङ. वयं जले मलं न वहेम।
च. पर्यावरणस्य सन्तुलनं अस्माकं कर्त्तव्यः।

8. **इन वाक्यों से करण कारक छाँटकर लिखिएः**

क. नासिकाया	ख. कलमेन	ग. पादाभ्याम्
घ. जनकेन	ङ. पृष्ठेन	

एकादशः पाठः — सुभाषितानि

अर्थ-

1. विदेश में जाने पर विद्या ही धन है। विपत्ति में (बुद्धि) धैर्य ही धन है। परलोक में धर्म ही धन है। अच्छा आचरण सब जगह आभूषण होता है।
2. प्रिय वचन बोलने से सभी मनुष्य सन्तुष्ट हो जाते हैं। इसलिए (प्रिय बोलने से) वैसा बोलने से वचनों में क्या गरीबी आ जाएगी।
3. कमजोर मनुष्य का बल राजा होता है। बच्चों का रोना उनका बल होता है। चुप रहना मूर्ख का बल होता है। अत्याचार करना दुष्टों का बल होता है

4. मनुष्य ने पहली अवस्था में (अर्थात् 25 वर्ष तक) विद्या अर्जित नहीं की तथा दूसरी अवस्था (अर्थात् 25 से 50 वर्ष तक) में धन नहीं कमाया। तीसरी अवस्था में अर्थात् (50 से 75 तक) पुण्य अर्जित नहीं किया तो चौथी अवस्था (अर्थात् 75 से 100 वर्ष तक) क्या करोगे अर्थात् कुछ नहीं कर सकते।
5. नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं। वृक्ष परोपकार के लिए फल देते हैं। गाय परोपकार के लिए दूध देती हैं। यह शरीर भी परोपकार (भलाई) के लिए है।
6. विद्या विनम्र देती है और विनम्रता से योग्यता आती है। योग्यता से धन प्राप्त होता है। धन से धर्म और उससे सुख मिलता है।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. विदेशेषु विद्या धनम्।
ख. प्रियवाक्य प्रदानेन मानवः तुष्यन्ति।
ग. चौराणाम् अनृतं बलम्।
घ. विद्या विनयं ददाति।

2. खाली स्थान भरिए:

क. बालानाम् रोदनम् बलम् बलं मुर्खस्य मौनित्वं
ख. नार्जितं धन। तृतीयेनार्जितं पुष्यं; करिष्यति।
ग. विद्या ददाति विनयं; धनात् धर्मः ततः

3. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखिए :

विपत्ति में	आभूषण	गरीबी
रोना	झूठ (असत्य)	विनम्रता
योग्यता	सन्तुष्ट हो जाते हैं	मौन रहना

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए:

क. परलोके धर्मेव धनम् अस्ति।
ख. मुर्खः हितवचनम् न शृणोति।
ग. परोपकाराय एव वृक्षाः फलन्ति।
घ. विद्यार्थिनः पंच लक्षणः भवन्ति।
ङ. वयं सदैव मधुरं वचनं ब्रुयाम।

5. स्वयं कीजिए।

द्वादशः पाठः चत्वारः मूर्खाः

अर्थ- किसी गाँव में चार मित्र थे। उनमें से तीन शास्त्रों में चतुर थे। परन्तु व्यवहार में बुद्धि रहित थे। एक अन्य शास्त्र तो नहीं जानता था लेकिन बुद्धिमान था।

एक बार उन्होंने निश्चय किया कि हम प्रदेश में जाकर महाराज के सामने ही ज्ञान और पाण्डित्य का प्रदर्शन करेंगे। ऐसा सोचकर उन्होंने प्रदेश के लिए प्रस्थान किया। मार्ग में उन्होंने मृत शेर की हड्डियाँ देखीं।

तब उनमें से एक ने कहा– ''अरे मित्रों! हमको विद्या की परीक्षा करने के लिए अवसर मिला है। हम इस शेर को जीवित करते हैं।''

ऐसा कहकर उसने शेर की हड्डियों को निश्चित क्रम में लगा दिया। तब दूसरे ने उसमें रक्त, मांस, खाल आदि संचारित कर दिए। उसके पश्चात जब तीसरा प्राणदान करने के लिए तैयार हुआ तब शास्त्र ज्ञान

रहित चौथे ने कहा– इसको जीवन दान मत करो। यदि यह शेर जीवित होता है, तो हमको मार देगा। उसे सुनकर तीसरे ने कहा– हे मूर्ख! मैं भी अपनी विद्या का परीक्षण करूँगा। इसलिए मैं जीवन दान तो अवश्य करूँगा।

तब चौथे ने कहा– तो कुछ देर ठहरो। मैं वृक्ष पर चढ़ता हूँ। ऐसा कहकर एक वृक्ष पर चढ़ गया। तीसरे ने सिंह को जीवन दान कर दिया। जीवित होकर उस शेर ने उन तीनों पण्डितों को भी मारकर खा लिया और शेर उसके पश्चात चला गया। उसके बाद चौथा वृक्ष से उतरकर गाँव लौट गया।

अतः विद्वानों ने कहा है– विद्या की अपेक्षा बुद्धि ही श्रेष्ठ है। मूर्ख का ज्ञान अनर्थ का कारण होता है।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. चत्वारः सखा शास्त्रेषु पारङ्गताः आसन्।
ख. चत्वारः मूर्खपण्डिता निश्चयं कृतवन्तः यत् वयं देशान्तरं गत्वा पाण्डितस्य प्रदर्शनं करिष्यामः।
ग. मार्गे ते एकः मृतसिंहस्य अस्थीनि दृष्टवन्तः।
घ. प्रथमः सिंहस्य अस्थीनि दृष्ट्वा योगक्रमेण योजितवान्, द्वितीय च मास चर्मदिक अकुरुताम्।
ङ. शास्त्रज्ञानरहितः चतुर्थः उक्तवान् यत् एतस्य जीवदानं मा कुरु।
च. जीवितः भूत्वा सिंहः त्रीन् पण्डितान् हत्वा खादितवान्।
छ. पण्डिताः वदन्ति ''विद्यायाः अपेक्षयाः बुद्धि एवं गरीयसी।''

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए:

क. शास्त्रं; बुद्धिमान् ख. चिन्तयित्वा; देशान्तरं ग. अस्थीनि; योजितवान् घ. चतुर्थः; जीवदानं ङ. त्रीन्; हत्वा च. मूर्खस्य; अनर्थस्य

3. हिंदी में अर्थ लिखिए :

किसी	निपुण	सामने
मरा शेर	प्राप्त किया	हड्डियाँ
जोड़ा (लगा दिया)	शीघ्र (क्षण भर)	उतरकर

4. संस्कृत लिखिए:

आसीत्	मित्रम् (सखा)
उद्यतः	तिष्ठतु
प्रत्यागतवान	गरीयसी

5. दी गई तालिका से सही वाक्य बनाकर लिखिए :

त्रयः	शास्त्रेषु तु पारङ्गताः परन्तु व्यवहारे बुद्धिरहिताः	आसन्।
मार्गे ते	एकः मृतसिंहस्य अस्थीनि	दृष्टवन्तः।
वयं	एतं सिंहम् जीवितं	कुर्मः।
तदा द्वितीयः	तत्र रक्त मांसचर्मदिक	संयोजितवान्।
तं श्रुत्वा तृतीयः	उक्तवान्– हे मूर्ख! अहमपि स्व विद्यायाः परीक्षां	करिष्यामि।
तृतीयः	सिंहस्य जीवदानं	कृतवान्।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए:

क. एकस्मिन् ग्रामे चत्वारः सखायः निवसन्ति स्म।
ख. आगच्छ, वयं नृपं समीपं चलामः।
ग. प्रथमः अस्थीनि योजितवान्।

घ. तेषु चतुर्थः बुद्धिः रहितं आसीत्।

ङ. सिंहः जीवितः भूत्वा वयं खादिष्यति।

7. अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए:

ग. पाठ में आए उपसर्ग तथा प्रत्यययुक्त शब्द छाँटकर लिखिए।

उपसर्ग शब्द- प्रस्थिताः संयोजितवान्, निगतः, आरूढवान्, अनर्थस्य, प्रदर्शनम्, प्रत्यागतवान्, आरोहामि।

प्रत्यययुक्त शब्द- कृतवन्तः, चिन्तयित्वा, लब्धः, दृष्टवन्तः, कर्तुम् उक्त्वा, उक्तवान्, संयोजिवान्, निर्गतः, वृक्षतः, श्रुत्वा, भूत्वा, कृत्वान, अवतीर्य, प्रत्यागतवान्।

त्रयोदशः पाठः — हिमालयः

अर्थ- यह हिमालय है। हिमालय पर्वतों का राजा है। इसलिए हिमालय को पर्वतराज कहते हैं। हिमालय भारतवर्ष की उत्तर दिशा में स्थित है। इसकी एवरेस्ट- गौरीशंकर-वन्दरपुच्छ नाम की चोटियाँ बहुत ऊँची हैं। हिमालय की चोटियाँ सदैव बर्फ से ढकी रहती हैं। इसके उत्तर में तिब्बत, नेपाल, चीन, भूटान देश है। हिमालय प्रहरी की तरह हमारे देश की रक्षा करता है।

हिमालय से गंगा-सिन्धु-ब्रह्मपुत्र-यमुना-सतलुज, व्यास-चेनाब-झेलम आदि प्रसिद्ध नदियाँ निकलती हैं। ये नदियाँ भारतवर्ष के विविध प्रदेशों को हरा-भरा करती हैं।

हिमालय का प्राकृतिक सौन्दर्य मन को अच्छा लगने वाला है। यहाँ अनेक प्रकार के पशु, पक्षी और वनस्पतियाँ सभी लोगों के हृदय को आकर्षित करती हैं। पहले हिमालय में बहुत से ऋषि रहते थे। यहाँ अनेक ऋर्षियों ने तप किया। हमारे अनेक तीर्थ स्थान यहाँ हैं। उनमें बदरीनाथ, केदारनाथ और अमरनाथ प्रसिद्ध हैं। इसका कैलास शिखर बहुत ही सुन्दर है। यह भारतमाता का मुकुट कहलाता है। हिमालय के दर्शनीय स्थानों में कश्मीर विद्यमान है। कवि लोग कश्मीर की तुलना स्वर्ग से करते हैं। ग्रीष्म ऋतु में गरमी से पीड़ित लोग हिमालय पर जाते हैं। हिमालय पृथिवी के मानदण्ड की तरह है। महाकवि कालिदास ने कहा है कि–

भारत के उत्तर की दिशा में देवता स्वरूप पर्वतों का राजा हिमालय पर्वत पूर्व और पश्चिम के दोनों सागरों में डुबकी लगाता हुआ पृथिवी (दो भाग करता हुआ) को नापता हुआ स्थित है।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. पर्वतराजः हिमालयः अस्ति।

ख. हिमालयः भारतवर्षे वर्तते।

ग. अस्य उत्तरस्यां तिब्बत-नेपाल-चीन-भूटान देशाः सन्ति।

घ. हिमालयात् गंगा-सिन्धु-ब्रह्मपुत्र-यमुना-शतद्रु-विपासा चन्द्रभाग-वितस्तादयः प्रसिद्धाः नद्यः निर्गच्छन्ति।

ङ. हिमालयः भारतमातुः किरीटः कथ्यते।

च. जनाः ग्रीष्मर्तौ हिमालयं गच्छन्ति।

छ. महाकवि कालिदासेन हिमालयः पृथ्वियाः मानदण्डः उक्तम्।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए:

क. शिखराणि; आच्छादितानि ख. देशं रक्षां ग. प्रदेशान् शस्यश्यामलान् घ. ऋषयः तपः ङ. दर्शनीषु; कश्मीरं च. पृथ्वियाः; वर्तते

3. **हिंदी में अर्थ लिखिए :**

कहलाता है	ऊँची	व्यास नदी
सुन्दरता	हृदय	मुकुट
देवता स्वरूप	झेलम नदी	दो समुद्र

4. **इन शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिएः**

शिखराणि– हिमालयस्य अनेकानि शिखराणि सन्ति।

नद्यः– हिमालयात् गंगा नद्यः उद्गच्छति।

पशवः– क्षेत्रे अनेके पशवः चरन्ति।

चेतांसि– हिमालयः जनानाम् चेतांसि आकर्षति।

मानदण्डः– हिमालयः पृथिव्याः मानदण्डः इव वर्तते।

5. **सही वाक्य के सामने 3 चिह्न लगाइएः**

क. 3 ख. 7 ग. 7 घ. 3 ङ 3

6. **इन शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिएः**

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
भारतवर्षस्य	षष्ठी	एकवचन
शिखराणि	प्रथमा/द्वितीया	बहुवचन
रक्षाम्	द्वितीया	एकवचन
प्रदेशान्	द्वितीया	बहुवचन
हिमालयस्य	षष्ठी	एकवचन
स्थानेषु	सप्तमी	बहुवचन
ग्रीष्मर्तौ	सप्तमी	एकवचन

7. **क. संधि-विच्छेद कीजिए :**

वितस्ता + आदयः	वनस्पतयः + च
अति + अन्तमे	ग्रीष्म + ऋर्तौ
अस्ति + उत्तरस्याम्	हिम + आलयस्य

ख. समझिए और लिखिए :

क. बालकः बालिका च पुस्तकं पठतः।

ख. रामः मोहनः च कन्दुकेन क्रीडतः।

ग. पत्रम् च फलम् च वृक्षात् पततः।

घ. गंगा यमुना च हिमालयात् निर्गच्छतः।

8. **संस्कृत में अनुवाद कीजिएः**

क. हिमालयः पर्वतानाम् राजा अस्ति।

ख. अत्र अनेकानि दर्शनीयानि स्थानानि सन्ति।

ग. कश्मीरं पृथ्वियाः स्वर्गं कथ्यते।

घ. हिमालयः भारतस्य उत्तरदिशायं स्थितो वर्तते।

ङ. गंगाम् भागीरथी अपि कथ्यते।

7. **अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिएः**

ग. 'जननी' शब्द के रूप।

'जननी' शब्द के रूप

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा विभक्ति	जननी	जनन्यौ	जनन्यः
द्वितीया विभक्ति	जननीम्	जनन्यौ	जननीः
तृतीया विभक्ति	जनन्या	जननीभ्याम्	जननीभिः
चतुर्थी विभक्ति	जनन्यै	जननीभ्याम्	जननीभ्यः
पंचमी विभक्ति	जनन्याः	जननीभ्याम्	जननीभ्यः
षष्ठी विभक्ति	जनन्याः	जनन्योः	जननीनाम्
सप्तमी विभक्ति	जनन्याम्	जनन्योः	जननीषु
सम्बोधन	हे जननीः!	हे जनन्यौ!	हे जनन्यः!

चतुर्दशः पाठः — संङ्घे शक्तिः

अर्थ- किसी वन में नदी के किनारे एक बड़ा बरगद का वृक्ष था। उस वृक्ष पर अनेक पक्षी मित्रता के भाव से रहते थे। उन पक्षियों में एक लघुपतनक नाम का कौआ भी रहता था। एक बार एक शिकारी वहाँ आ गया। उसने भूमि पर बहुत सारा अनाज फैलाकर उनके ऊपर जाल फैलाया। स्वयं एक स्थान पर छिपकर बैठ गया।

कुछ समय पश्चात चित्रग्रीव नाम का कबूतरों का एक राजा परिवार के साथ वहाँ आया। भूमि पर फैले हुए अन्न को देखकर चित्रग्रीव ने अपने साथियों से कहा–''अरे मित्रों! जल्दी उड़ चलो। यहाँ विपत्ति समीप है।''

परन्तु उसके साथियों ने उसके कहने की उपेक्षा कर बोले– अहो! यहाँ बहुत अन्न दिखता है। हमें खाना चाहिए। यह सुनकर कपोतराज चित्रग्रीव ने कहा– ''सदैव विचार कर ही कोई भी कार्य करना चाहिए। तब परिवारजनों ने चित्रग्रीव से कहा विपत्ति के समय में तो विचारकर करना चाहिए परन्तु भोजन के विषय में क्या विचार करना चाहिए। ऐसा कहकर वे अनाज को खाने के लिए आकाश से भूमि पर उतरते हैं। वे सब अन्न पर फैले हुए जाल में फँस गए। वे बहुत प्रयत्न करते हैं परन्तु जाल से बाहर आने में सफल नहीं होते हैं।

तब चित्रग्रीव ने कहा– अरे-अरे कबूतरों! डरो नहीं, डरो नहीं। तुम सब साहस करो। तुम सब जाल लेकर शीघ्र आकाश में उड़ो अन्यथा मृत्यु को प्राप्त होंगे। चित्रग्रीव के वचन मानकर उन्होंने वैसा ही किया। जाल को लेकर सहसा वे सब एक साथ ही आकाश में उड़ते हैं। इसे देखकर शिकारी चिल्लाते हुए उनके पीछे दौड़ा। परन्तु क्षणभर में ही वे आकाश में अदृश्य हो गए। निराश होकर शिकारी वहीं बैठ गया।

चित्रग्रीव जाल में फँसे उन कबूतरों को लेकर अपने मित्र चूहों के राजा हिरण्यक की गुफा के पास गया। चित्रग्रीव की सब बातों को सुनकर हिरण्यक ने अपने तेज दाँतों से जाल काट दिया और उनको बन्धन से छुड़ा दिया। सभी कबूतर बुद्धि और संगठन (एकता) के बल से सफल हो गए। वास्तव में एकता में बहुत शक्ति होती है।

अभ्यासः Exercise

1. **संस्कृत में उत्तर लिखिए :**

   क. खगाः वटवृक्षे निवसन्ति स्म।

   ख. व्याधः वने भूमौ अन्नं विकीर्य तान् उपरि जालं अप्रसारयत्।

   ग. चित्रग्रीवः सहचरान् अकथयत् यत् सत्वरं उड्डीयताम्।

घ. प्रभूतं अन्नं दृष्ट्वा खगाः आकाशात् भूमिम् अवतरन्ति।
ङ. चित्रग्रीवः कपोतान् अवदत् पाशं नीत्वा आकाशे उत्पतत्।
च. चित्रग्रीवस्य वचनं मत्वा ते आकाशे उत्पतन्ति।
छ. कपोतानां जालं हिरण्यकः अकर्तयत्।
ज. संघे महती शक्तिः भवति।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए:

क. मित्रभावेन ख. एकस्मिन्; निलीनः ग. अन्नकणं; आकाशात् घ. क्षिप्रम् ङ. तीक्ष्णैः दन्तैः

3. वाक्य में आए गलत शब्द काट दीजिए:

गलत शब्द- क. खगाः, ख. अन्नाय ग. जालं घ. व्याधस्य ङ. कपोताः

4. क. हिंदी में अर्थ लिखिए :

किनारे	शिकारी	छिपना
जल्दी, शीघ्र	विचार कर	फैले हुए
शीघ्र	बिल	ताकत

ख. इन शब्दों की संस्कृत लिखिए :

नद्या तीरे	उपेक्ष्य
निबद्धाः	पाशं नीत्वा
निमिषमात्रेषु	अमोचयत्

5. क. इन शब्दों की विभक्ति, कारक और वचन लिखिए :

शब्द	**विभक्ति**	**कारक**	**वचन**
भूमौ	सप्तमी	अधिकरण कारक	एकवचन
चित्रग्रीवं	द्वितीया	कर्म कारक	एकवचन
अन्नकणं	द्वितीया	कर्म कारक	एकवचन
आकाशात्	पंचमी	अपादान कारक	एकवचन
कपोतान्	द्वितीया	कर्म कारक	बहुवचन

ख. इन शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

तेषु	**तेषु** खगेषु एकः काकः अस्ति।
निलीनः	व्याधः **निलीनः** अतिष्ठत्।
विपत्तिकाले	**विपत्तिकाले** तु विचार्य कर्तव्यम्।
निबद्धाः	ते जाले **निबद्धाः** आसन्।
नीत्वा	ते जालं **नीत्वा** उत्पतन्ति।

6. संधि कीजिए :

तथैव	अत्रैव	चेति
अत्रान्तरे	किमपि	सहसैव
तत्रैव	स्वागतम्	कालोऽयम्

7. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

सरिता	तटनी	पादपः	तरुः
पक्षीः	विहग	धरा	भूः
मनुष्यः	जनः	सङ्घ	संगठनम्

8. संस्कृत में अनुवाद कीजिए:

क. भो मित्रा! यूयं क्षिप्रं आकाशे उत्पतत।

ख. वने एकः व्याधः आसीत्।
ग. कपोताः जाले निबद्धाः आसन्।
घ. हिरण्यकः चित्रग्रीवस्य मित्रं आसीत्।
ङ. सः अस्माकं जालं कर्तयिष्यति।
च. त्वं साहसं कुरु।

याद कीजिए

'खाद्' और 'दृश' धातु के लोट् लकार में रूप अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

'खाद्' के लोट् लकार रूप

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यम पुरुष	खादः	खादतम्	खादत
उत्तम पुरुष	खादानि	खादाव	खादाम

'दृश्' के लोट् लकार रूप

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्यः	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

पञ्चदशः पाठः — पत्रलेखनम्

1. अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र

प्रतिष्ठा में,
प्रधानाचार्य
प्रयाग सरस्वती शिशु उपवन विद्यालय
विषय- तीन दिन के रुग्णावकाश के लिए प्रार्थना-पत्र।
महोदय,
सविनय निवेदन करता हूँ कि मैं ज्वर से पीड़ित हूँ। सिर के दर्द से बहुत पीड़ित हूँ। गले में भी पीड़ा है। अतः मैं आज विद्यालय में उपस्थित होने में असमर्थ हूँ।
आज से अक्टूबर महीने की 14 दिनाङ्क से तीन दिन तक का रुग्णावकाश स्वीकार कर आप मुझे अनुगृहीत करें।
धन्यवाद!
आपकी आज्ञाकारी शिष्य
अंशुल सिंघल
पंचम कक्षा
दिनाङ्क - 3-10-20.....

2. मित्र को पत्र

के-736, जहाँगीरपुरी
नई दिल्ली
दिनाङ्क - 16-02-20.....
प्रिय मित्र मयंक
यहाँ सब कुशल हैं। वहाँ पर भी सब कुशल होंगे। तुम्हारा पत्र प्राप्त किया, पत्र में तुमने लिखा कि मैं चौथी

कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ हूँ। पढ़कर अत्यधिक प्रसन्न हूँ। इस समय मिष्ठान्न दो। मैं भी यदि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होऊँगा तब तुझे मिठाई दूँगा। तुम कब मेरे पास आओगे। यह बात है और कुशल वृतान्त लिखकर शीघ्र पत्र दो। शेष सब कुशल हैं। सबको नमस्कार।

तुम्हारा मित्र
अभिनव

3. पुत्र का पिता को पत्र

मदनमोहन मालवीय विद्यालय छात्रावास
वाराणसी नगर से,
दिनाङ्क - 4-11-20.....
पूज्य पिताजी
चरणों में प्रणाम!

भगवान की कृपा से यहाँ कुशल हूँ, वहाँ पर भी ऐसा हो। पत्र आज ही प्राप्त किया और सारा वृतान्त जान लिया। मैं यहाँ पढ़ाई में लगा हूँ। मेरी अर्द्धवार्षिक परीक्षा दिसम्बर मास में होगी। परीक्षा में मैं विद्यालय के सभी छात्रों में प्रथम होऊँगा ऐसी आशा है। आपके आशीर्वाद से मेरी आशा पूरी होगी। परीक्षा के पश्चात शीत-अवकाश में मैं घर आऊँगा।

पूज्य माता जी के चरणों में मेरा प्रणाम। घर में बड़ों के लिए नमस्कार और अनुजा को प्यार कहना और अन्य सब कुशल हैं।

आपका पुत्र
रजनीश

अभ्यासः Exercise

1. खाली स्थान में उचित शब्द भरिएः

क. उपस्थातुम् ख. कुशलाः ग. मिष्ठान्नं घ. आशीर्वादेन; पूर्णा ङ. अग्रजाय; अनुजायैः

2. इन शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिएः

शब्द	विभक्ति	वचन
स्वीकृत्य	7	7
अनुगृहणातु	7	7
कक्षायां	सप्तमी	एकवचन
पठित्वा	सन्धि नहीं	7
अध्ययने	सप्तमी	एकवचन
आर्शीवादेन	तृतीया	एकवचन

3. इन शब्दों के अर्थ सहित संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

अक्षमः	असमर्थ	विद्यालये उपस्थातुं अक्षमः अस्मि।
भवतां	आपका	भवतां शिष्यः अस्मि।
श्रेण्याम्	श्रेणी	अहं प्रथम श्रेण्याम् उत्तीर्णः अभवम्।
तुभ्यं	तुझको	नमस्तुभ्यम्
सकलं	सम्पूर्ण	सः सकलं दुःखमयं संसार प्रतिगच्छति।
गृहे	घर में	गृहे कः अपि?

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिएः

क. मम कण्ठे अपि पीड़ा अस्ति। ख. वयं अत्र कुशले स्मः।
ग. अहं शीतावकाशे गृहं गमिष्यामि। घ. त्वम् मम समीपं कदा आगमिष्यसि।

1. कुमार्ग जाते हुए सगे भाई को भी त्याग दो।
2. भूमि मेरी माता है, मैं धरती का पुत्र हूँ।
3. पानी सूख जाने पर क्या (झील) तालाब?
4. प्रेम से क्रोध को जीतना चाहिए।
5. सर्पों से घिरा होने पर भी चन्दन में विष व्याप्त नहीं होता।
6. महाजन जिस रास्ते से जाता है वह मार्ग है।
7. मुख्य रूप से शरीर ही धर्म (व्यापार) का साधन है।
8. कायर लोग ही कहते हैं कि जो होना है वह होगा।
9. महान लोग सम्पत्ति (सुख) और विपत्ति (दुःख) में एक समान रहते हैं।
10. व्यवहार से ही मित्र और शत्रु उत्पन्न होते हैं।
11. जो व्यवहार अपने (विपरीत) प्रतिकूल है, उसे दूसरों के लिए व्यवहार में मत लाओ।
12. अजीर्णता (बदहजमी) में भोजन विष होता है।

अभ्यासः Exercise

1. खाली स्थान भरिएः

क. पुत्रोऽहं ख. महासर्पैः; विषायते ग. शरीरमाद्यं घ. जलपन्ति;भविष्यति ङ. आत्मनः; परेषी च. जायन्ते

2. विलोम शब्द लिखिएः

आर्द्रे	अमृतम्	अपवित्रम्
वीराः	तद्	शत्रुः

3. हिंदी में अनुवाद कीजिए :

क. भूमि मेरी माता है मैं भूमि का पुत्र हूँ।
ख. साँप लिपटे रहने पर चन्दन में विष व्याप्त नहीं होता।
ग. सम्पत्ति और विपत्ति में महान लोग एक समान होते हैं।
घ. जो अपने प्रतिकूल हो ऐसा आचरण दूसरों से मत करो।
ङ. महाजन जिस मार्ग से जाते हैं वही रास्ता है।

4. इन वाक्यों का सही मेल मिलाइएः

क. शुष्क नीरे	कः कासारः।
ख. कातरा एव जल्पन्ति	यद् भाव्यं तद् भविष्यति।
ग. व्यवहारेण जायन्ते	मित्राणि रिपवस्तथा।
घ. अपन्थानं तु गच्छन्तं	सोदरोऽपि विमुञ्चति।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. दुःखस्य पश्चात सुखं आयति।
ख. चन्दने विषस्य प्रभावं न भवति।
ग. अक्रोधेन क्रोधं जयेत्।
घ. कश्मीरे सुन्दराः कासराः सन्ति।
ङ. विधाता अपि दुर्बलस्य शत्रु भवति।

अर्थ- आज विज्ञान का युग है। हमारे चारों ओर प्रतिदिन विज्ञान के नए आविष्कार होते हैं। शिक्षा क्षेत्र में, आवागमन के क्षेत्र में, चिकित्सा क्षेत्र में, प्रौद्योगिक क्षेत्र में और अन्य बहुत से क्षेत्रों में विज्ञान का अधिकार है। विज्ञान ने हमारे जीवन में बहुत परिवर्तन किया और अनेक प्रकार के चमत्कार दिखाए।

भूमि पर वाष्पयान, तैलयान और विद्युतयान चलते हैं। आकाश में वायुयान स्वतन्त्र रूप से विचरण करते हैं। जलयान समुद्र के ऊपर यात्राओं में सहायक हैं। इन यानों के द्वारा हमारी यात्रा थोड़े समय में पूर्ण हो जाती है। इन यानों की सहायता से हम विश्व के चारों ओर कुछ घंटों में या दिनों में घूमने में समर्थ हैं।

अब तो राकेट के प्रयोग से कुछ देश चन्द्र की ओर जाने के लिए तैयार हैं। परमाणु बम की शक्ति के आविष्कार द्वारा विज्ञान से अद्भुत क्रान्ति हुई। अमेरिका देश ने परमाणु बम के प्रयोग से जापान देश के दो नगरों को सदैव के लिए नष्ट कर दिया।

अब शिक्षा के क्षेत्र में विज्ञान द्वारा बहुत उन्नति हुई। छपाई मशीन से पुस्तकों की छपाई होती है। इसकी सहायता से प्रतिदिन नए समाचार हम जानते हैं। आकाशवाणी द्वारा हजारों कोस दूर बैठे भी हम मार्ग में, घरों में गीत, समाचार, नाटक और भाषण सुनते हैं। यही नहीं या (और क्या) दूरदर्शन की सहायता केवल हम कहते नहीं भाषण सुनते हैं बल्कि उसका रूप और अभिनय भी देखते हैं। दूरदर्शी (दूरबीन) यन्त्र से अति दूरस्थ गृह आदि को भी हम देखने में सक्षम हैं। तार यन्त्र समाचारों को एक क्षण में ही इधर-उधर भेज देते हैं तथा टेलीफोन की सहायता से दूर (स्थित) बैठे होने पर भी हम अपने मित्रों के साथ अपनी इच्छानुसार वार्तालाप करते हैं।

चिकित्सा के क्षेत्र में भी विज्ञान द्वारा क्रान्ति हुई। एक्सरे, कैटस्केन, अल्ट्रासाउण्ड यन्त्रों की यह महिमा है कि शरीर के भीतरी रोग भी प्रकट होते हैं। वास्तव में इन यन्त्रों की खोज करने वाले धन्य हैं।

वैज्ञानिकों के आविष्कार के बिना हमारे दैनिक कार्य भी नहीं होते हैं। अधिक क्या कहें हमारी लेखनी भी विज्ञान के महत्त्व को प्रकट करती है। इन लेखनियों को ''फाउण्टेन पैन'' कहते हैं। इनसे आवश्यकतानुसार स्याही स्वतः प्राप्त होती है। हम यहाँ-वहाँ कहीं भी जाते हैं अपनी लेखनी सदैव ले जाते हैं और इच्छानुसार लिखते हैं।

इस प्रकार जीवन के सभी क्षेत्रों में विज्ञान का महत्त्व देखते हैं। यद्यपि युद्ध में इसका प्रयोग मानव के नाश के लिए होता है तथापि बुद्धिमान लोग मनुष्य के हित के लिए इसके प्रयोग के लिए प्रयत्नशील हैं। दुरुपयोग करना मनुष्य का दोष है, विज्ञान का नहीं। विज्ञान उपकारी हो ऐसा ही प्रयास करना चाहिए।

अभ्यासः Exercise

1. संस्कृत में उत्तर लिखिए :

क. शिक्षा क्षेत्रे, परिवहन क्षेत्रे, चिकित्सा क्षेत्रे, प्रौद्योगिक क्षेत्रे विज्ञानस्य अधिकार वर्तते।

ख. अद्यत्वे विज्ञानस्य युगम् अस्ति।

ग. विज्ञानं अस्माकं जीवने परिवर्तनम् अकरोत्।

घ. विमानस्य जलपोतस्य च सहायताया वयं विश्वं परितः भ्रमणे समर्थः।

ङ. पुस्तकानां समाचार पत्राणां च मुद्रणाय मुद्राण यन्त्राणि सततं चलन्ति।

च. यन्त्राणाम् आविष्कारकाः धन्या सन्ति।

छ. युद्धेषु विज्ञानस्य प्रयोगः मानवानाम् नाशाय भवति।

ज. दुरुपयोग मानवस्य दोषः अस्ति।

2. खाली स्थान में उचित शब्द भरिए:

क. परिवर्तनम् ख. समुद्रस्योपरि ग. दूरदर्शियन्त्रैः; दर्शनाय घ. विज्ञानेन

ङ. लेखन्यः; प्रकटयन्ति च. उपकारम्; प्रयासः छ. आविष्कारेण

3. वाक्य में आए गलत शब्द काट दीजिए:

गलत शब्द- क. यानाम् ख. विज्ञानस्य ग. समाचारं घ. यन्त्रेण; विकारेण ङ. मानवे; विज्ञानानां

4. दिए गए शब्दों की संस्कृत लिखिए और संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

जलयान	जलयानम्	समुद्रे जलयानं चलति।
आकाशवाणी	आकाशवाणीः	आकाशवाण्याः वयं समाचारान् आकर्णयामः।
टेलीफोन	दूरभाषम्	मम गृहे दूरभाषम् यन्त्रम् अस्ति।
छपाई मशीन	मुद्रणयन्त्रम्	अस्माकम् नगरे मुद्रणयन्त्रम् अस्ति।
अन्वेषक	आविष्कारकः	अत्र आविष्कारकः अस्ति।

5. क. इन शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिए :

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
आकाशे	सप्तमी	एकवचन
परमाणोः	षष्ठी	एकवचन
भाषणानि	प्रथमा/द्वितीया	बहुवचन
नाशाय	चतुर्थी	एकवचन
सुधियः	प्रथमा	बहुवचन
यन्त्राणां	षष्ठी	बहुवचन

ख. संधि-विच्छेद कीजिए :

समुद्रस्य + उपरि	अल्पेन + एव	सर्वथा + अनाशयत्
सहस्त्र + एषु	च + आकर्णयाम्	भाषणम् + एव
क्षेत्रे + अपि	यथा + इच्छम्	अत्र + एव

6. खाली स्थान पर उचित शब्द रूप लिखिए:

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	देशः	देशौ	देशाः
द्वितीया	जलपोतं	जलपोतौ	जलपोतान्
तृतीया	आविष्कारेण	आविष्काराभ्यां	आविष्कारैः
चतुर्थी	उपकाराय	उपकाराभ्याम्	उपकारेभ्यः
पञ्चमी	आकाशात्	आकशाभ्याम्	आकाशेभ्यः
षष्ठी	चिकित्सायाः	चिकित्सयोः	चिकित्सानाम्
सप्तमी	जने	जनयोः	जनेषु

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. अद्य विज्ञानस्य युगम् अस्ति।

ख. वयं आकाशे उडयनं कर्तुं शक्नुमः।

ग. भारते अनेके आविष्कराः अभवन्।

घ. दूरदर्शने वयं अनेकान् कार्यक्रमान् पश्यामः।

ङ. मम पार्श्वे एकं मोबाइलं अस्ति।

च. किम् त्वम् समुद्रीयात्रां अकुरुः?

छ. विज्ञानस्य अस्माकम् जीवने अत्यधिकम् महत्वं अस्ति।

अर्थ- हरि का द्वार ऐसा हरिद्वार नामक नगर देश के सभी तीर्थों में से मन को मोहने वाला, शान्तिदायक और आनन्दप्रद है। वहाँ गंगा की अविरल धारा मन को एकाग्र करती है। पुराणों में मायापुरी गंगाद्वार, कपिल आश्रम इत्यादि इसके दूसरे नाम हैं।

यह जनश्रुति है कि सगर राजा के पुत्र कपिलमुनि के शाप से भस्म हो गए थे। इसके पश्चात उनके वंशज महाराज भगीरथ ने अपने पूर्वजों के लिए तप किया। तपस्या से प्रसन्न होकर गंगा मृत्युलोक में आई और राजा के पुत्रों का उद्धार किया।

भारतवर्ष के चार कुम्भ मेला के स्थानों में से हरिद्वार का एक स्थान है। छः वर्ष के बाद यहाँ अर्द्धकुम्भ मेला लगता है और बारह वर्ष के अन्तराल से महाकुम्भ मेला लगता है। यहाँ इस मेले में एक लाख से अधिक लोग गंगा के जल में स्नान करके अपने आप को धन्य करते हैं। कुम्भ मेले के कारण यह नगरी 'कुम्भनगरी' भी कहलाती है।

''हरि की पैड़ी' नामक स्थान ब्रह्मकुण्ड नाम से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि महाराजा विक्रमादित्य के भाई नीतिशतक के रचयिता भर्तृहरि ने यहाँ पर ही तपस्या कर अमरत्व (अमरता) को प्राप्त किया। शाम के समय यहाँ गंगा की आरती होती है। असंख्य दीपक गंगा जल में बहते हैं। यह दृश्य तो बहुत ही मनमोहक है।

यहाँ गंगा के घाटों में कुशावर्त नामक घाट प्रसिद्ध है। यहाँ भगवान दत्तात्रेय ने तपस्या की। पिण्डदान के लिए तो यह स्थान सर्वोत्तम माना जाता है।

गंगा के दक्षिण भाग में विल्व नाम के पर्वत पर मनसा देवी का मन्दिर है तथा हरिद्वार के पूर्व की दिशा में नील नाम के पर्वत पर चण्डी देवी का मन्दिर है।

वहाँ अनेक श्रद्धालु लोग पूजा अर्चना के लिए और देवी के दर्शन के लिए पैदल ही जाते हैं। वहाँ जाने के लिए रज्जू मार्ग भी है। लोग उसका उपयोग करते हैं।

हरिद्वार में मन्दिरों की अधिकता भी है। उनमें माया देवी का मन्दिर, भारतमाता का मन्दिर, महादेव मन्दिर, वैष्णवदेवी का मन्दिर इत्यादि मन्दिर अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। विश्व प्रसिद्ध गायत्री तीर्थ ''शान्ति कुञ्ज'' हरिद्वार में ही स्थित है।

यहाँ दक्षप्रजापति की राजधानी 'कनखल' नामक स्थान भी विश्व प्रसिद्ध है। यह स्थान हरिद्वार से भी प्राचीन मोक्षदायक है।

अभ्यासः Exercise

1. **संस्कृत में उत्तर लिखिए :**

   क. पुराणेषु हरिद्वारस्य मायापुरी, गंगाद्वार, तपोवन, कपिलाश्रम अन्यानि नामानि सन्ति।

   ख. महाकुम्भ मेला द्वादश वर्षानन्तरं भवति।

   ग. 'हरि की पैड़ी' ब्रह्मकुण्ड नाम्ना प्रसिद्धम् अस्ति।

   घ. भगवान दत्तात्रेयः कुशावर्ते तपः अकरोत्।

   ङ. मनसा देव्या मन्दिरम् विल्व पर्वते अस्ति।

   च. हरिद्वारे मायादेव्या मन्दिरम्, भारतमातुः मन्दिरम्, महादेव मन्दिरम्, वैष्णव देव्याः मन्दिरं अन्यानि मन्दिराणि सन्ति।

2. **खाली स्थान में उचित शब्द भरिए:**

   क. मनांसि एकाग्रताम् ख. प्रसन्नोभूत्वा; मर्त्यलोके ग. गंगाद्याः घ. पूजार्चनार्थम्; दर्शनार्थं ङ. गायत्री; शान्तिकुञ्जम् च. अपि विश्व

3. वाक्य में दिए गलत शब्द को काट दीजिए:

गलत शब्द- क. चतुस्त्र ख. पूर्वजाः ग. गंगाया घ. नामकं ङ. मन्दिरेषु च. मार्गे

4. इन वाक्यों की क्रिया शुद्ध करके लिखिए:

क. अवातरत् ख. भवति ग. प्रवहन्ति घ. अस्ति ङ. कुर्वन्ति च. सन्ति

5. क. दिए शब्दों के हिंदी में अर्थ लिखकर अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

क. शान्ति देने वाला	इदं स्थलं शान्तिप्रदं अस्ति।
ख. निरन्तर	गंगा अविरल वहति।
ग. भस्म होना	ते कपिलमुनेः शापात् भस्मिभूता अभवन्।
घ. लाख से अधिक	गंगा जलं प्रतिदिनं लक्षाधिका जनाः स्नानं कुर्वन्ति।
ङ. घाटों में	तेषु घाटेषु कुशावर्त प्रसिद्धम् अस्ति।

ख. इन शब्दों की विभक्ति और वचन लिखिए :

शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
गंगायाः	षष्ठी	एकवचन
पुराणेषु	सप्तमी	एकवचन
नृपस्य	षष्ठी	एकवचन
उद्धाराय	चतुर्थी	एकवचन
मन्दिराणाम्	षष्ठी	बहुवचन

ग. सन्धि-विच्छेद कीजिए :

कपिल + आश्रमः	वर्ष + अनन्तरम्
अत्र + एव	पूजा + अर्चना + अर्थम्
दर्शन + अर्थम्	गमन + अर्थम्

6. एक या दो शब्द में उत्तर लिखिए :

क. कपिलस्य शापात् ख. भगीरथः ग. सायंकाले

घ. चण्ड़ी देव्याः ङ. कुशावर्त घाटम्

7. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :

क. हरिद्वारम् मनमोहकं तीर्थस्थानम् अस्ति।

ख. अत्र द्वादश वर्षानन्तरम् मेला भवति।

ग. गंगाजलम् पवित्रम् अस्ति।

घ. अत्र अनेकानि प्राचीन मन्दिराणि स्थितानि सन्ति।

ङ. गगायां असंख्य दीपकाः प्रवहन्ति अतिशोभन्ते।

च. कनखले दक्षप्रजापतेः मन्दिरम् अस्ति।

छ. इदं हिन्दुनाम् प्रसिद्धम् तीर्थस्थलं अस्ति।

एकोनविंशतिः पाठः — व्याकरणम्

1. इन शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए, नियम तथा संधि का नाम भी लिखिए :

श्रीशः	श्री + ईशः	ई + ई = ई	दीर्घ सन्धि
वधूत्सवः	वधू + उत्सवः	ऊ + ऊ = ऊ	दीर्घ सन्धि
सदैक्यम्	सदा + एक्यैम्	आ + ए = ऐ	वृद्धि सन्धि
देवर्षिः	देव + ऋषिः	अ + ऋ = अर्	गुण सन्धि

पित्रादेशः	पितृ + आदेशः	ऋ + आ = र्	यण सन्धि
नायकः	नै + अकः	ऐ + अ = आय्	अयादि सन्धि
सूर्योदयः	सूर्य + उदयः	अ + उ = ओ	गुण सन्धि
विद्यालयः	विद्या + आलयः	आ + आ = आ	दीर्घ सन्धि
देशेऽस्मिन्	देशे + अस्मिन	ए + अ = ऽ	पूर्वरूप सन्धि
सच्चरित्र	सत् + चरित्रः	त् + च = च्च	व्यञ्जन सन्धि
सदाचारः	सत् + आचारः	त् + आ = द्	व्यञ्जन सन्धि

2. संधि कीजिएः

सत्	+	बन्धुः	=	सद्बन्धु	सत्	+	धर्म	=	सद्धर्मः
सत्	+	ईशः	=	सतीशः	हित	+	उपदेशः	=	हितोपदेशः
तदा	+	एव	=	तदैव	विष्णो	+	ए	=	विष्णेव
हरिस्	+	शेते	=	हरिश्येते	जगत्	+	ईशः	=	जगदीशः
निः	+	छलम्	=	निश्छलम्	कः	+	अपि	=	कोऽपि
रामः	+	अत्र	=	रामोऽत्र	सः	+	अपि	=	सोऽपि